ISBN- 978-93-341-1860-5

डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

अंकित कुमार

राम निहोरे

डॉ0 गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान

डॉ0 राजीव अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा संकाय
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

अंकित कुमार
बी0एस-सी0 (गणित), बी0एड0

राम निहोरे

बी0एस-सी0 (गणित),एम0एड0

डॉ0 गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान

डॉ0 राजीव अग्रवाल
अंकित कुमार
राम निहोरे

E-book संस्करण: 2024

मूल्य: रु **35**

ISBN: 978-93-341-1860-5

प्रकाशक –

राम निहोरे
ग्राम–नया पुरवा, पोस्ट–रूक्मा खुर्द
तहसील–मानिकपुर, जिला–चित्रकूट
पिन कोड: **210205**
(उत्तर–प्रदेश)

मोबाइल नम्बर: **8887540736**
ईमेल: ram1989nihore@gmail.com

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब ही उन्नति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास के सर्वोत्तम अवसर मिलें तथा वे उन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ हो। मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण, विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, चिन्तन प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर मानव ने न केवल ब्रह्माण्ड की परिधि को लाँघा है वरन् अपनी सभ्यता तथा संस्कृति का विकास करते हुए आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने की दिशा में अग्रसर हुआ है, परन्तु मानव जाति के विकास का आधार शिक्षा प्रणाली ही है।

शिक्षा मानव विकास की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से शुरू होकर मृत्यु तक चलती रहती है। मनुष्य सदैव कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर इस योग्य बनाती है कि वह संसार में अपनी एक अलग पहचान बनाता है।वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार-प्रसार का एक माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुँचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक है, **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान का अध्ययन** इस पुस्तक को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक अध्ययन परिचय है। **जिसके** अन्तर्गत, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, अध्ययन के उद्देश्य, **शोध** विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता, समस्या का प्रादुर्भाव पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है जिसके अन्तर्गत शैक्षिक विचार धारा से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' जी का बाल्य जीवन परिचय, वंश परंपरा, अध्यापन यात्रा, अध्ययन यात्रा, शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में योगदान के विभिन्न पहलुओ पर सविस्तार वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' जी की साहित्य सर्जना का उल्लेख किया गया है। **जिसके अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तके, प्रकाशित कविताये, अप्रकाशित कविताओ वर्णन किया गया है।**

पंचम अध्याय में सम्पूर्ण शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव से सम्बन्धित शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिये शोध कार्य को जनमानस के लिये सुलभ बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो जाता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेको क्षेत्रों में नवीन अनुसन्धान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही प्रमोद दीक्षित 'मलय' जी का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डालने में सहायक सिद्ध होगी ।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियों होना स्वाभाविक है। अतः अनुभवी विद्वतगण त्रुटियों को अवगत कराने का कष्ट करें जिससे संस्करण में त्रुटियों को दूर किया जा सके, हम अत्यन्त आभारी रहेंगें।

डॉ. राजीव अग्रवाल

अंकित कुमार

राम निहोरे

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु-	पृष्ठ संख्या

अध्याय	विषय वस्तु-	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय
अध्ययन परिचय

1.1 शिक्षा: एक विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ज्ञान, तकनीकी दक्षता उचित आचरण, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, और के उत्कर्ष पर केन्द्रित है। शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, तथा समाज की संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखती है। बच्चा, शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है। जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है। तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्ष्' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ हुआ सीखने-सिखाने की क्रिया है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं। तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में; व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण-प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है, व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदिन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना-सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना-सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में

सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा विद्यार्थी निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर सम्बन्धित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा को एक प्रक्रिया माना जाता है। प्रक्रिया का अर्थ है एक विशेष प्रकार की क्रिया, जिससे मानव में कुछ विशेषताएँ आ जाती है। मानव कुछ जन्मजात शक्तियों के साथ इस संसार में आता है। इन जन्मजात शक्तियों के साथ मानव को कुछ बाहरी शक्तियाँ (भौतिक और सामाजिक शक्तियाँ) भी प्राप्त होती हैं। मानव की इन जन्मजात व बाहरी शक्तियों में क्रिया-प्रतिक्रिया होती रहती है। यही क्रिया-प्रतिक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया है। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ के अनुसार शिक्षा मानव की आन्तरिक शक्तियों का विकास करने की प्रक्रिया है। मानव में जो जन्मजात आन्तरिक विद्यमान होती है। उनका विकास वातावरण के सम्पर्क में से होता है। मानव अपने विकास के लिए जन्म से प्राप्त शक्तियों और भौतिक व सामाजिक शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु क्रिया-प्रतिक्रिया करता रहता है। इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप मानव ज्ञान व अनुभव प्राप्त करता है, और वह सीखता है। जब हम शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हैं। तो मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है, और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। मनुष्य क्षण प्रतिक्षण नए-नए अनुभव प्राप्त करता है, व करवाता है, जिससे उसका दिन-प्रतिदन का व्यवहार प्रभावित होता है। उसका यह सीखना सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों, पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन आदि से अनौपचारिक रूप से होता है। यही सीखना सिखाना शिक्षा के व्यापक तथा विस्तृत रूप में आते है। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालय, महाविद्यालय) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्र निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

1.2 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ

1.2.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण को लेकर भारत सरकार ने कई आयोगों का गठन ही नहीं किया। अपितु उनकी सलाह पर कार्य किया। परन्तु फिर भी स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ। इसके सम्बन्ध में कोठारी आयोग 1964 ने कहा है- बार-बार सलाह देने के पश्चात भी दुर्भाग्य की बात यह है। कि विद्यालय स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा को एक घटिया किस्म की शिक्षा समझा जाता है। और अभिभावक तथा विद्यार्थियों का सबसे आखरी चुनाव होता है। शिक्षा का व्यवसायीकरण का सामान्य शब्दों में अर्थ होता है। किसी व्यवसायिक में प्रशिक्षण अर्थात विद्यार्थी को एक व्यवसाय सिखाना। ताकि वह अपना जीवन यापन सुगमता से कर सके। शिक्षा के साथ-साथ उन कोर्सों की भी व्यवस्था की जाए जो छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ किसी व्यवसाय में भी कुशल व्यक्ति बनाए।

1.2.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

अधिकांश लोगों को आश्चर्य होता है। कि स्कूलों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना क्यों आवश्यक है? क्या आप अपने आप को ऐसे परिदृश्य में पाते हैं? जहाँ राजनीति और शिक्षा के बीच सम्बन्धों के सम्बन्ध में एक पराजय होती है। बराक ओबामा को आदर्श उदाहरण के रूप में उपयोग करने में संकोच न करें। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति को आधुनिक युग के महानतम नेताओं में से एक माना जाता है, और उनकी अनुकरणीय नेतृत्व शैली सबसे शानदार घटनाओं में से एक है जिसे कई लोग सीखना चाहते हैं। इसलिए, उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ईर्ष्या पूर्ण नेतृत्व की स्थिति कैसे मिली, इसलिए राजनीति और शिक्षा को एक साथ लाने वाले अधिक सत्रों को एकीकृत करने की आवश्यकता को खारिज करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण के रूप में पर्याप्त होना चाहिए। शिक्षा की प्राथमिक भूमिका एक छात्र के पढ़ने, समझ और समझ में सुधार के माध्यम से शिक्षित करना ही है। अशिक्षित नेताओं द्वारा शासित दुनिया की कल्पना निराधार है। यह प्रशंसनीय नहीं लगता, है ना? इसीलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है। कि बुक स्मार्ट होना प्रभावी नेतृत्व के बारे में बहुत कुछ नहीं दर्शाता है। लेकिन फिर भी यह कई घटनाओं में से एक के रूप में मदद करता है। जो एक महान

नेता बनाने के लिए आवश्यक है। शिक्षा किसी की सोच को कंही अधिक विस्तृत करती है। हालाँकि, हमें स्कूलों में अधिक राजनीति शुरू करने में सावधानी बरतनी चाहिए, शिक्षा प्रणाली को वामपन्थी झुकाव के लिए जाना जाता है, विश्वविद्यालयों को और अधिक लेकिन नवीनतम आम चुनाव में वामपन्थी दलों के पक्ष में पूर्वाग्रह अधिक था। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए। कि हमारे भविष्य के नेताओं और राजनेताओं को राजनीति सिखाते समय कि हम कुछ हद तक तटस्थ रुख रखते हैं, जाहिर है कि हम पूर्वाग्रह और रुख को समाप्त नहीं कर सकते हैं। लेकिन हम लेबर पार्टी या लिब डेम्स के विचारों के बजाय एक सन्तुलित राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित कर सकते हैं। दूसरा जनमत संग्रह दल या मार्क्सवादी समाज हमारे बच्चों को मार्क्सवाद से लेकर फ़ासीवाद तक और साथ ही बीच में सब कुछ के राजनीतिक स्पेक्ट्रम की चरम सीमाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। और यह सर्वोपरि होना चाहिए, कि बच्चों को सूचना अन्तराल और अपना मन बनाने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीति विज्ञान और कानून उन सर्वोत्तम पाठ्यक्रमों के रूप में पर्याप्त हैं। जो चतुराई से राजनीति और शिक्षा के बीच के बन्धन को जोड़ते हैं। शिक्षण संस्थानों में या तो प्रभावी नेतृत्व प्रणाली के माध्यम से या पाठ्यक्रमों के माध्यम से राजनीति को शामिल करना, भविष्य के नेताओं को आकार देने में सहायता करता है। साथ ही जनता को यह भी शिक्षित करता है, कि प्रशासनिक प्रक्रियाएँ कैसे होती हैं? हर यात्रा एक कदम से शुरू होती है। ऐसे मामलों में, स्कूलों में राजनीतिक घटनाएँ होने से छात्रों को अपने भविष्य के कैरियर की तैयारी करने में मदद मिलती है। यह तय किया जाना चाहिए कि राजनीति न केवल राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर होती है। बल्कि कॉर्पोरेट जगत में भी होती है। ऐसे वातावरण के सम्पर्क में आने वाले छात्र नीति सलाहकार बनने के साथ-साथ सरकार और कॉर्पोरेट एजेंसियों दोनों के लिए उत्साही शोधकर्ता बनने का एक बेहतर मौका देते हैं। इसलिए राजनीति और शिक्षा उनके सहजीवी सम्बन्धों के मूल्य को दर्शाती है क्योंकि वे दोनों एक-दूसरे को फिर से परिभाषित करते हैं।

राजनीति और शिक्षा दो ऐसे क्षेत्र हैं। जो सीखने पर केन्द्रित समान विषयों पर निर्भर करते हैं। इसका तथ्य यह है, कि हर शिक्षक कभी छात्र था। हर नेता कभी प्रशिक्षु नेता था। हालाँकि एक बात स्थिर रहती है;

ज्ञान सर्वोपरि है। इन घटनाओं को यह बताने के लिए आवश्यक उदाहरण होना चाहिए। राजनीति और शिक्षा में हमेशा एक सहजीवी बन्धन रहेगा।

1.2.3 शिक्षा व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। जिसमें शिक्षकों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर अपने-अपने विचार दिए। पुरातन गुरू-शिष्य परम्परा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरू का सम्मान करते हुए हैं। शिक्षा पाते थे। परन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिसका कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है। अभिभावक भी इस पर ध्यान नहीं देते। अभिभावक भी हम शिक्षकों के पास भेज तो देते हैं। लेकिन वे यह जानने का प्रयास नहीं करते कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण की ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक शिक्षक भी जिम्मेदार हैं। प्राचीन गुरू-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गम्भीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा। वर्तमान में शिक्षक छात्र सम्बन्धों में कमी आई है। यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है, कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध नि:स्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं। जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है, कि अभिभावक, गुरू, छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्न प्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है। न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानान्तर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है।

1.2.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई हैं। तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों मे आधारभूत ढाँचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएँ संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं, और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है, और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। सरकारी स्कूल की बात करें तो यहाँ चार वर्षों से कोई अध्यापक है, ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती है, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती है। यह स्थिति देश के सम्पन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है, कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त कर सकती। गाँव के स्कूल में एक अध्यापिका है। तो यह तीन साल में स्कूल गई है। यहाँ बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है, कि वहाँ पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पाँच साल पहले केन्द्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती, यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है, या नहीं। अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए। क्योकि शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड करने जैसा है।

1.2.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। और सभी सिद्धान्तों का एक मात्र उद्देश्य है। मनुष्य का कल्याण करना। मानव जीवन में संस्कार और संस्कृति का बहुत महत्व है। संस्कार सम्पन सन्तान ही गृहस्थ की सफलता और समृद्धि का रहस्य है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता का

कर्तव्य बनता है कि वे अपने वच्चों को नैतिक बनाएं और कुसंस्कारों से वचाकर वचपन से ही उनमे आदर्श और संस्कारों का ही बीजारोपण करें। लेकिन आज भारतीय संस्कृति और संस्कार सब लुप्त होते दिखाई दे रहे हैं। आज बालकों में हिंसा तथा व्यभिचार की प्रवृति बढ़ रही है। आखिर क्यों? आज युवा वर्ग परिश्रम और धैर्य से दूर होता जा रहा है। समाज में सात्विक प्रवृति का दमन होता जा रहा है। हम पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ रहे हैं। जहाँ पूरा विश्व हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना रहा है। और हम अपनी संस्कृति को भूलकर उनकी संस्कृति को अपना रहे हैं। यह हमारी मूर्खता नहीं तो और क्या है? आज हम अपनी भारतीय संस्कृति की अवहेलना करने लगे हैं। संस्कारो की उपेक्षा एवं पश्चिमी जीवन शैली के अंधानुकरण से समाज में अनेक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। जैसे कि आहार प्रणाली में बदलाव से अनेक बीमारियाँ, शिक्षा पद्धति में वदलाव से अनेक मानसिक कुरीतियाँ और पाश्चात्य रहन-सहन से अनेक सामाजिक कुरीतियाँ उत्पन्न हो गयीं हैं।

1.2.6 योग्य शिक्षकों का अभाव

"भारतीय शिक्षा प्रणाली बुरी नहीं है। बल्कि समस्या योग्य शिक्षकों की कमी है। शिक्षण के जुनून या वित्तीय कारणों के बिना अच्छे शिक्षक शिक्षण के क्षेत्र में नहीं आते हैं। दुर्भाग्यवश हमारे देश में शिक्षक, विशेषकर सरकारी स्कूल प्रणाली में काम करने वाले शिक्षकों को प्रशासन की समस्या के रूप में देखा जाता है। इसमें सारा ज़ोर अध्यापकों के कौशल और प्रेरणा को विकसित करने के बजाय उन्हें कक्षा में लाने पर केन्द्रित रहता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा कराए गए एक अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण डिज़ाइनिंग में शिक्षकों के फीडबैक को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता है। तथा साथ ही स्थानीय मुद्दों में कोई खास बदलाव नहीं किया जाता और न ही इन पर विचार करने को अहमियत दी जाती है।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण थी। जैसे-जैसे हम आधुनिकता

और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए। शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण, राजनीतिकरण हुआ। परन्तु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

आधुनिक समय में योग्य शिक्षको का अभाव है। जहां अयोग्य शिक्षकों का बाहुल्य है। जिसमें शिक्षकों के द्वारा किये गए कार्यो का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। उनकी लिखी हुयी कृतियाँ को पाठ्यक्रम में लागू किया जाना चाहिए। जिसमे शोधार्थी ने बाँदा जनपद के एक सुयोग्य अध्यापक **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान** पर लघु शोध करने का निर्णय किया।

1.4 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया—

"डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान"।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन में उद्देश्यों का निर्धारण उस अध्ययन का निश्चित दिशा प्रदान करता है, जिससे अध्ययन सरल व सुव्यवस्थित सुगम हो जाता है। अतः इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है—

- डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना
- डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' की साहित्य सर्जना का अध्ययन करना।
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।

1.6 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसन्धान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारु रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का अविष्कार किया है। जिसका प्रयोग समस्या प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघु-शोध का अध्ययन के उद्देश्य एवं प्रकृति के आधार पर तथा अध्ययन की समस्या को देखते हुए, अनुसन्धान विधि के रूप में वर्णनात्मक अध्ययन विधि एवं केस अध्ययन अध्ययन विधि का चयन किया गया है।

1.6.1 वर्णनात्मक अध्ययन

शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसन्धान का महत्व बहुत अधिक है। इस विधि का प्रयोग शिक्षा व मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से होता है। जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार ''वर्णनात्मक अनुसन्धान 'क्या है' का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है। अभ्यास जो चालू है। विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रहीं है। प्रक्रियायें जो चल रही है, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं। अथवा नयी दिशायें जो विकसित हो रही है। उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।'' वर्णनात्मक अनुसन्धान का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में होता है- वर्तमान स्थिति क्या है ? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्णनात्मक अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान दशाओं, क्रियाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय के ज्ञान प्राप्त करना है। वर्णनात्मक अनुसन्धानकर्ता समस्या से सम्बन्धित केवल तथ्यों को एकत्र ही नहीं करता है। बल्कि वह समस्या से सम्बन्धित विभिन्न चरों में आपसी सम्बन्ध ढूँढने का प्रयास करता है साथ ही भविष्यवाणी भी करता है।

1.6.2 केस अध्ययन विधि

किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के सम्बन्ध में गहन अध्ययन हेतु एक महत्वपूर्ण विधि केस अध्ययन विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति में रोगात्मक लक्षणों को पहचान कर कारणों के ज्ञान के आधार पर निदान किया जाता है। अतः इसे नैदानिक विधि भी कहते हैं। इस विधि के द्वारा अध्ययनकर्ता किसी रोगी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी जीवन की सभी तरह की घटनाओं का एक विस्तृत इतिहास ज्ञात किया जाता है। घटनाओं की जानकारी में प्रारम्भिक सूचनाएं, अतीत की घटनायें तथा वर्तमान अवस्थाओं के बारे में अधिक जानकारी संकलित की जाती हैं। तथा उनका विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किये जाते हैं। जानकारी में साक्षात्कार प्रश्नावली, व्यक्तित्व परीक्षण तथा मापनी आदि का प्रयोग किया जाता है पर व्यक्ति का गहन अध्ययन, विकास का क्रम तथा जीवन की समस्याएँ जानने की समुचित विधि है। इस विधि में

अनेक स्रोतों जैसे व्यक्ति विशेष, उसके माता पिता, पारिवारिक जन, रिश्तेदार, पडोसी, विद्यालय, मित्रगणों, सहयोगियों एवं सम्बन्धित अभिलेखों से सूचना एकत्रित कर किसी व्यक्ति, स्थिति, समूह अथवा संस्था के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ गया प्रसाद सनेही के शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया है वे हिंदी के एक आदर्श शिक्षक होने के साथ साथ एक लेखक एवं कवी के रूप में प्रतिष्ठित है तथा अपनी लेखनी से जनसामान्य को लाभान्वित कर रहे है**,** निश्चय ही यह लघु शोध विशेष कर हिंदी भाषा के शिक्षकों के लिए प्रेरणा दायी है और भी जीवन में काव्य काव्य के समन बिखेरने में सक्षम हो सकेंगे इसके अतिरिक्त विद्यार्थी एवं जन सामान्य भी इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त कर हिंदी भाषा एवं संस्कृति में उत्थान अपना योगदान दे।

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसन्धान की प्रक्रिया में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्वपूर्ण चरण है। क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है। जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पथ होते हैं। ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढी को ज्ञान का स्थानान्तरण, ज्ञान में वृद्धि करना। यह तथ्य शोध में विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पर्णू व आशिंक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से सम्बन्धित जितना भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्व परिचित करे जिससे यह ज्ञात होता है। कि समस्या से सम्बन्धित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है। उसमें शोध की कौन सी प्रविधि प्रयुक्त की गई। और समस्या कौन सा पक्ष ऐसा है जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर, परिष्कृत कर अथवा पूर्ण या आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं। ज्ञान को एकत्र करना, एक-दूसरे तक पहुँचाना, और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धान्तों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के

सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता हैं। कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका हैं। अथवा नहीं "डॉ० सी. वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का सम्बन्धित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है। जब तक उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।" अनुसन्धान चाहे किसी भी क्षेत्र का हों उसका लक्ष्य सम्बन्धित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई हैं। तथा सदियों से उसका एक क्रम निरन्तर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया अनन्त है जब तक मानव जीवन है। उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो कैसा हो या होना चाहिए ? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2. शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया। जिसका विवरण निम्नलिखित है—

1**. शादाब आबी, (2009)** ने डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- दोनों के विचारों में पारम्परिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनो के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वागीण विकास है दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते है।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यन्त प्रासंगिक है। आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते है। शारीरिक दण्ड को बिलकुल समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी आंतरिक रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में है।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारको ने सहसंबंध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

2. सिंह, किरन (2008) ने "रवींद्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शान्त वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अन्तिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की जो वास्तविता ही मानवता है।
- बालक के अन्दर विश्वधुत्व की भावना, भू-मण्डलीयकरण की बात होती जा रही है संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे है। बालक को देश-विदेश के प्रति भी प्रेम को बढ़ावा मिले।

3. सिंह, अनन्त बहादुर (2008) ने, 'मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन' किया और यह पाया कि-

- रवीन्द्र नाथ ठाकुर हमारे देश के न केवल एक उच्चकोटि के कवि, गायक, संगीतज्ञ, नाट्यकार अभिनेता, उपन्यासकार निबन्ध लेखक, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मानवतावादी तथा राष्ट्रवादी थे, वरन वे एक कट्टर अन्तर्राष्ट्रीयतावादी थे। वे सच्चे अर्थ में एक विश्व नागरिक थे जिनकी राष्ट्रीयता उनकी विशाल अन्तर्राष्ट्रीयता के अनुरूप थी।
- इनके सम्बन्ध में लिखते हुये आर० श्रीनिवास आयंगर लिखते हैं, कि टैगोर संसार के महानतम शिक्षाशास्त्रियों में अद्वितीय स्थान रखते हैं, क्योंकि उन्होंने एक शिक्षा दर्शन का विचार किया या निकाला और अपने दर्शन को कार्य क्षेत्र में अनूदित करने में उच्च मात्रा की सफलता प्राप्त की।
- रविंद्र नाथ टैगोर के सम्बन्ध में डॉ० सुरेन्द्रनाथ दास गुप्ता ने लिखा है, की प्रतिभा सम्पन्नता अद्वितीय और अतुलनीय थी और अन्यत्र कहीं भी यह प्रतिमा अथक परिश्रम से संबंधित नहीं पाई जाती है

जैसा की उनमें सभी का कथन है उनका व्यक्तित्व ऐसा चित्र हमारे सामने उपस्थित करता है जो मानव इतिहास में अद्वितीय है। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था कि यह गुरुदेव की उपलब्धि है, जिससे कि उन्होंने इस रिक्त स्थान को अपने निजी प्रयत्नों से भर दिया यह संकेत शन्ति निकेतन की ओर है। प्रो० हुमायूँ कबीर का कथन है कि टैगोर ने परम्परा को बिना तोड़े हुए शिक्षा के विचारों में क्रान्ति ला दी है, इससे स्पष्ट है कि टैगोर ने भारतीय शिक्षा में क्या प्रगति और परिवर्तन किया है।

4. वर्मा, रामनिवास (2005) ने "भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता " शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि-

- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल्य आधारित जीवन पद्धति है। जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोकमानस को मूल्य निकायों की ओर निर्देशित करती है। ये मूल्य निकाय भारतीय जनजीवन पद्धति के प्रेरणा स्रोत हैं तथा सदैव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अग्रसर करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति अपने सरलतम अर्थ में भी लोकजीवन में जीवन मूल्यों के अनुप्रयोग व विनियोग का ऐसा अनन्य उदाहरण प्रस्तुत करती है जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव सृजनात्मक के घटकों को प्रेरित विकसित कर निरन्तर नये भारतीय जीवन मूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।
- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवन मूल्यों को विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। ये विशेषज्ञता के क्षेत्र भारतीय जीवन मूल्यों को तर्काधार प्रदान करते हैं।

5. सिंह, रेनू (2008) ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि—

- आधुनिक काल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण शाहू जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान हैं। स्वतन्त्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति, एकाग्रता, चिन्तन, समाजीकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास, शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्व इसमें

हैं, जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक, उपयोगी एवं सार्थक हैं व इन्हें उच्चतम शिक्षा शास्त्री के रूप में अधिष्ठित करती है।

- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धान्त हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं, उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धान्त कहा जा सकता है।
- इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपना कर भारत की उद्देश्य विहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

6. सिंह, नीलम (1999) **ने** "भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- मिशनरियों का शैक्षिक योगदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। यद्यपि मिशनरियों ने विशुद्ध परोपकारिता की भावना से स्कूल संचालित नहीं किये थे, बल्कि इनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। फिर भी इन लोगों ने स्कूल की कार्य प्रणाली तथा संगठन में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सुधार किये जिसके कारण स्कूल के स्वरूप तथा संरचना के विषय में हमारी धारणायें स्पष्ट हो सकी।
- सर्वप्रथम मिशनरियों ने हम लोगों को स्कूल की नवीन अवधारणा प्रदान की। इसके पहले स्कूल क्या है? और स्कूल किसे कहते है? इस सम्बन्ध में हमारे विचार सुस्पष्ट नहीं थे। मिशनरियों के आगमन से पूर्व देशी पाठशालाओं की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, ये पाठशालाओं अधिकांशतः टूटे-फूटे मकानों, गोशालाओं, अस्तबलों या किसी ताल्लुकेदार के मकान एक हिस्से में लगा करती थीं। इस प्रकार स्कूल क्या है? तथा स्कूल में क्या कार्य होगा? जन साधारण के समझ में नहीं आता थी। मिशनरियों ने सबसे पहले विद्यालय को सार्वाधिक शिक्षा का केन्द्र माना और भारत में साविधिक शिक्षा की नीव डाली। इस प्रकार मिशनरियों के द्वारा स्कूल के लिए किये गये, साविधिक कार्यक्रम को देखकर वर्तमान समय में भारतीयों ने उनकी शिक्षा प्रणाली से सीखकर साविधिक शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाया।

- मिशनरियों के आगमन के पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम अत्यन्त संकुचित तथा अपर्याप्त होते थे। देश की निर्धनता देशी शिक्षा की अवनति का प्रधान कारण थी। देश की अधिकांश जनता निर्धन होने के कारण अपने बच्चों को नाम मात्र तक की फीस तक नहीं दे पाते थे। देशी शिक्षा के पतन के बाद यूरोपीय जातियों में प्रविष्ट किया इसके साथ ही वहां की यूरोपीय मिशनरियाँ भी आयी। जिन्होंने धर्म प्रचार के लिए शिक्षा को अपना माध्यम चुना और अनेक प्राथमिक विद्यालय खोले प्राथमिक शिक्षा के प्रारम्भिक प्रयास निशनरियों द्वारा किये गये। इनका उद्देश्य अपनी बस्ती के बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध करना था शिक्षा द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करना था।

7. **तिवारी, बाबूलाल** (1996-97) **ने** वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं0 दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन किया और यह पाया कि—

- पं. दीनदयाल जी एक सन्त राजनेता थे। शिक्षा संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणायें हैं। वे लोकतन्त्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे। समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है उनका ऐसा मन्तव्य था इसीलिए 'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी। अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे। उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने वैचारिक चिंतन पर अधिक था।

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे। पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किये जाने को असंगत तथा राजनैतिक प्राणी' 'सामाजिक प्राणी' या आर्थिक प्राणी की संज्ञा को एकांगी मानते थे। उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्याष्ट व समष्टिगत आवश्यकता है। इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतक आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए इसी चिन्तन से ही उनका एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

8. शर्मा डॉ० शशिकांत (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया और यह पाया कि—

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वातंत्र्य, निर्भयता, स्वावलम्बन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता, सद्-असद् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौन्दर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वातंत्र्य जैसे मूल्यों को अत्यन्त मौलिक रूप से परिभाषित किया है।

- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है, परन्तु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिन्दगी व्यतीत कर दे तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा कहानी सुनाकर या उपदेश देकर नहीं किया जा सकता है वे कहते हैं कि सत्य पाठ पढ़ाकर आलक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गये लगते हैं। चूंकि वे अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण मनुष्य को आत्मा की स्वतंत्रता से भ्रष्ट करता है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है पर चाहता है कि बालक नीतिवान बने यह कदापि सम्भव नहीं है।

- गिजू भाई बालक को प्रकृति शिक्षा दिये जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनायेंगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है। इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है। प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है। अतः उसे चाहिए

कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले। अपने आत्मिक विकास के तत्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

9. तिवारी सुधा (2009) ने "लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन किया और यह पाया कि—

- सदियों से पराधीनता के कारण अपनी गरिमामयी संस्कृति से अनभिज्ञ भारतीय जनता को पुनः चेतन तथा सचेष्ट करने के लिए भारतीय विचारकों के विचारों को अपनी परिस्थिति के अनुसार कार्य करना पड़ा, न कि वे इसके स्थान पर पश्चिमी विचारकों से विचार सहमति या असहमति प्रगट करने का कार्य करते। अतः इतना कहना ही पर्याप्त है, कि अपने क्षेत्र और अपने कार्य के अनुरूप उन्होंने शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। भारतीय विचारकों में प्रतियोगिता की भावना नहीं थी। वरन् जीवन के सच्चे मूल्यों की खोज करना। जो कि काल के गर्त में समाधिस्थ कर दिये गये हैं, उनको पुनः जागृत कर स्मरण करना ही उनकी शिक्षा का लक्ष्य था।
- कुछ मानवों को ऐतिहासिक घटनायें बनाती है, जब कि कुछ लोग स्वयं इतिहास का निर्माण करते हैं। महात्मा गाँधी स्वयं ऐसे पुरूष थे। जिन्होंने अपनी मस्तिष्क मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था, और एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।
- महात्मा गाँधी के विचार परिवर्तित होने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में पूर्ण संगति रखते हैं। यदि हम उनकी शिक्षाओं और दार्शनिक विचारों को अपनाने में समर्थ हो सकें तो रामराज्य' एवं नये स्वर्ण युग का निर्माण कर सकते हैं।

10. मिश्रा, शशि (2002) ने ‘‘समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि—

- भारतीय दृष्टि में दर्शन और जीवन इतने सम्पृक्त रहे हैं, कि इनमें अन्तर नहीं देखा गया। प्राचीन काल में सम्पूर्ण जीवन का क्षेत्र दर्शन का क्षेत्र था। महर्षिगण तपस्या करके सत्य का दर्शन करते थे तथा

जीवन में उतारते थे एवं अपने व्यवहारपरक अनुभव की शिक्षा दूसरों को प्रदान करते थे। भारतीय दार्शनिकों के सामने दुखों के आत्यान्तिक नाश तथा पूर्ण आनंद अथवा मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसकी प्राप्ति का मार्ग शोधा था, अतः उनमें बीच की कुछ बातों में भिन्नता होने पर भी कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर साम्य है। सर्वश्री सतीश चन्द्र चट्टोपाध्याय एवं वीरेन्द्र मोहनदत्त ने नैतिक व आध्यात्मिक बिन्दुओं में समानता निरूपित की है।

- भारत के सभी दर्शनों का उद्देश्य पुरुषार्थ साधन रहा है।
- दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असन्तोष से होती है, परन्तु आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण उसमें आशा का संचार होता रहता है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉ० जाकिर हुसैन एवं डॉ० ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन, रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का एक अध्ययन, 'मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं0 दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, लोकतान्त्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन तथा समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। किन्तु ‘‘डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' के शैक्षिक योगदान’’ पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघु शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 बाल्य जीवन

डॉ० गया प्रसाद ‘सनेही’ जी का जन्म 2 मार्च, 1957 को जनपद फतेहपुर के अंतर्गत यमुना के दोआब तथा ससुर खदेरी के तट पर बसे हुए ग्राम रानीपुर बहेरा में हुआ। जो फतेहपुर से 45 किलोमीटर की दूरी पर आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण के मध्य) में स्थित है। इनके पिताजी का नाम श्री रामसजीवन था। जिन्हें प्यार से लोग 'बूटी बाबा' भी कहते थे। डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' जी बचपन से ही चंचल स्वभाव के थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के परिषदीय विद्यालय में सम्पन्न हुई। कवि सनेही जी के निर्माण का श्रेय इनके गुरुदेव पण्डित ब्रजमोहन पाण्डेय 'विनीत' जी का है। उनके द्वारा काव्य रचना की प्रेरणा तथा माँ की आँखों का करुण जल ही मिलकर कविता के रूप में अनजाने द्रवीभूत हुआ। जिस पर 'सही' की मुहर लगाने का श्रेय इनके गुरुदेव डॉ० ब्रजमोहन पांडेय ‘विनीत’ जी का है। उन्हीं की अकूत कृपा से आज कवि ‘सनेही’ जी कविताई के इस विराट अंजुमन में यहाँ तक पहुँच सके। इनका उपनाम ‘सनेही’ गुरुदेव का दिया हुआ है। ग्राम रानीपुर बहेरा वीर शिरोमणि अमर शहीद ठाकुर दरियाव सिंह के पूर्वज खड़क सिंह द्वारा बसाए गए, खागा कस्बे से 13 किलोमीटर दूर स्थित है। फतेहपुर जिले में स्थित कई स्थानों का उल्लेख पुराणों में भी मिलता है। जिनमें भृगु ऋषि की तपोस्थली भिटौरा महाभारत काल में ब्रह्मास्त्र पाने की लालसा से तप स्थान आए हुए द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा की नगरी असोथर तथा देव चिकित्सक
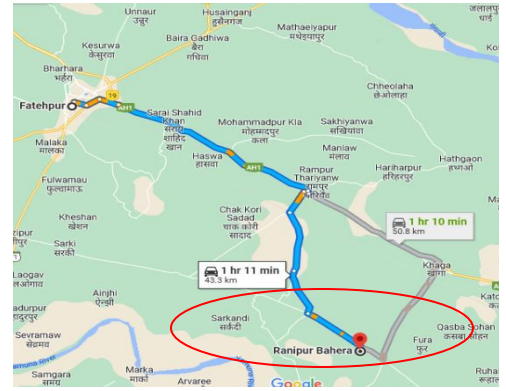
डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'विनीत' जी का माल्यार्पण करते हुए डॉ० 'सनेही' जी

की अश्विनी कुमारों असनि घाट प्रमुख है। ग्राम रानीपुर बहेरा अर्वाचीनता की झलक से कोसों दूर है। ऐसे ही ग्राम के वातावरण में अपने अनपढ़ किंतु कृषि जगत के पारखी पिता से जिन्हें कीर्तन, भजन, ठुमरी, सारंग, आल्हा आदि की तुकबंदी या सुनकर उन्हें जहन में रखने का आदी हो गये थे। गाँव की बैठक सभा छुट्टियों तथा वैवाहिक कार्यक्रमों की शिष्टाचार समितियों में दूसरों की काव्य पंक्तियां सुनाकर लोगों का दिल जीतने में यह सदैव माहिर थे। विद्यालय अथवा गैर विद्यालय कार्यक्रम में सहभाग कर अपने संभाषण या वक्तव्य के बीच तमाम कवियों की कविताओं को प्रस्तुत करने का कमाल डॉ० सनेही जी ने अपने छात्र जीवन में ही हासिल कर लिया था। इसी परजीवी किन्तु दैवीय अभ्यास ने इनको स्वरचना की ओर प्रेरित किया, और हाईस्कूल पार करते करते इन्होने अभिधेयार्थ की उंगली पकड़कर हिन्दी, जगत के सर्वाधिक प्राचीन छंद दोहा में 'सीख' नामक प्रथम लघु कविता की संरचना कर डाली; जिसे सही की मुहर लगाने और कॉलेज की 'उषा' वार्षिक पत्रिका में छापने का श्रेय इनके गुरुदेव जी डॉ० बृजमोहन पाण्डेय 'विनीत' जी का है। उनकी अनुपायनी कृपा से ये छंदोबद्ध कविताई के इस प्रौढ़ अंजुमन में यहाँ तक पहुंच सके इनका उपनाम 'सनेही' बृजमोहन पाण्डेय 'विनीत' जी का दिया हुआ है। उस समय वह शुकदेव इण्टर कॉलेज खागा, फतेहपुर में हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत थे। अब वे सेवानिवृत्त होकर स्वस्थापित साहित्यिक संस्था 'वाणी' के माध्यम से साहित्य की धरती को उर्वरा बनाए हुए हैं। तथा नवोदित रचनाकारों को रचना धर्मिता की संजीवनी पिलाकर उनकी लेखनी को निरंतर धार दे रहे हैं।

3.2 वंश परम्परा:

स्व. श्री रामदीन (पितामह)

↓

श्री रामसजीवन (पिताजी)

↓

डॉ० गया प्रसाद | श्री जगन्नाथ यादव (भाई) | श्री विश्वप्रताप सिंह (भाई)

श्रीमती कमला यादव (पत्नी)

↓

सरिता यादव (पुत्री) उत्कर्ष (पुत्र) नीलम यादव (पुत्री) आकाश सिंह (पुत्र) ज्योत्स्ना यादव (पुत्री)
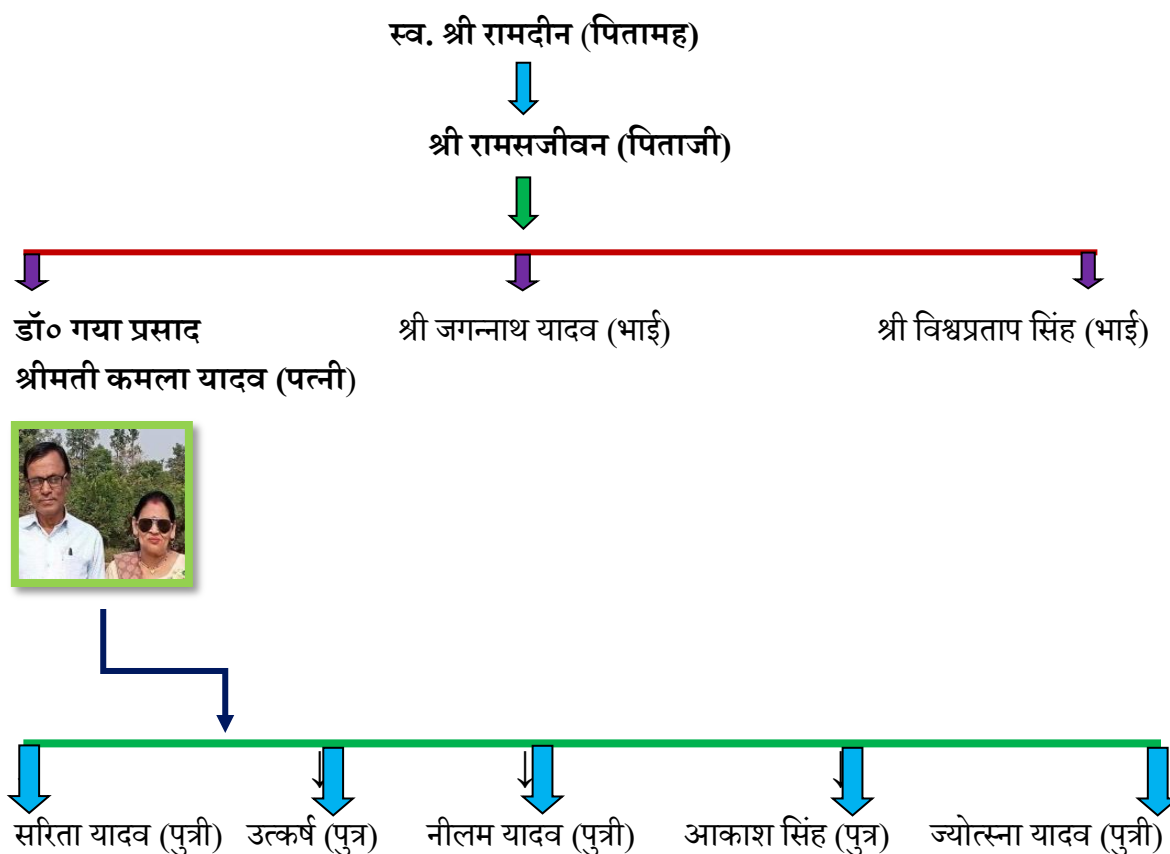
3.3 अध्ययन यात्रा

डॉ० गया प्रसाद जी ने कक्षा पांचवी तक की शिक्षा गाँव के ही प्राथमिक विद्यालय, रानीपुर बहेरा से प्राप्त की तथा इसके बाद हाईस्कूल की शिक्षा जनता विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, विजयपुर (फतेहपुर) से एवं इंटरमीडिएट की परीक्षा गाँव से 13 किलोमीटर दूर खागा में स्थित शुकदेव इण्टर कॉलेज से उत्तीर्ण की| इन्होने कला स्नातक की शिक्षा वर्ष 1978 में महात्मा गाँधी महाविद्यालय, फतेहपुर से प्राप्त की तथा आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रयागराज चले गए। यहाँ से इन्होंने एलटी की ट्रेनिंग सन् 1983 में

के.वी. ट्रेनिंग कॉलेज प्रयागराज से प्राप्त की व हिन्दी परास्नातक की परीक्षा वर्ष 1988 में छत्रपति शाहूजी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से परीक्षा उत्तीर्ण की।

'सनेही' जी को स्नातक करने के बाद जीवन में अनेक विसंगतियों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण नियमित रूप से अग्रिम उच्च शिक्षा का कार्य बाधित हो गया। जो बाद में व्यक्तिगत छात्र के रूप में अध्ययन करते हुए हासिल हुआ था। महात्मा गाँधी महाविद्यालय, फतेहपुर सन् 1978 में स्नातक करने के बाद जीवन में अनेक विसंगतियों का सामना करना पड़ा। जिसके कारण नियमित रूप से अग्रिम उच्च शिक्षा का कार्य बाधित हो गया। जो बाद में व्यक्तिगत छात्र के रूप में अध्ययन करते हुए हासिल हुआ था।

3.4 गृहस्थ जीवन

इनका वैवाहिक सम्बन्ध शिक्षण काल में ही हो गया था। जब इन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त कर ली, उसी समय से विवाह संस्कार के लिए लोगों का आना-जाना प्रारंभ हो गया था, घर में माता जी का देहांत पहले ही हो चुका था। इसलिए पिताजी के निर्देश और दबाव पर सन **1982** में विवाह हो गया| ससुराल ग्राम रानीपुर बहेरा से मात्र **35** किलोमीटर दूर पश्चिम दिशा की ओर पखरौली नामक गाँव में स्थित है, जो फतेहपुर जनपद में सदर तहसील के अंतर्गत आता है। मेरी पत्नी जी का पारिवारिक जीवन उत्तरदायित्व से भरा हुआ था, सही मायने में उनकी पढ़ाई लिखाई एवं अध्ययन-अध्यापन का कार्य विवाह के उपरांत हुआ। जब वे **P.HD.(2005)** कर रहे थे। तो इनकी धर्मपत्नी आधी रात तक जागकर ‘सर’ का मानसिक सहयोग प्रदान किया करती थी। इनके अध्ययन कार्य में वह कभी बाधक नहीं बनी।

डॉ. सनेही सर, धर्म पत्नी श्रीमती कमला यादव जी के साथ

3.5 सेवायोजन यात्रा

3.5.1 लेखपाल जीवन

सनेही' जी ने परास्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत राजस्व विभाग की तरफ ध्यान अपना आकर्षित किया| न चाहते हुए भी लेखपाल पद का 1 वर्षीय प्रशिक्षण लिया, प्रशिक्षण लेने के बाद इनकी प्रथम नियुक्ति अगस्त 1983 में तहसील हंडिया, प्रयागराज में हुई| किंतु उच्च्व पद पर पहुंचने की लालसा कभी कमजोर नहीं हुई। वह लगातार अपने अध्ययन के प्रति निरन्तर सजग रहे, 2 वर्ष के उपरांत इनका स्थानांतरण जनपद फतेहपुर के बिंदकी तहसील में हुआ, जंहा वह विभिन्न राजस्व ग्रामों की सेवा करते हुए और कृषकों के मध्य खट्टे मीठे अनुभव लेते हुए। सन् 1988 तक कार्यरत रहे। इसी दौरान उन्होंने बाढ़ पीड़ितों की मदद भी की और सरकार द्वारा संचालित परिवार नियोजन कार्यक्रम में भी सहभागिता का परिचय दिया। सन् 1988 के बाद सरकारी आदेश के मुताबिक उनका स्थानांतरण जनपद फतेहपुर की खागा तहसील में हुआ, और उस तहसील में उनकी प्रथम नियुक्ति कस्बा रजीपुर छूलहा में हुई। यहाँ लगभग 1 वर्ष तक कार्य करते हुए पद की गरिमा को निरंतर बनाए रखा। उनका अध्ययन यहाँ भी जारी रहा। इन्होंने 1989 में इस पद से त्यागपत्र दे दिया।

3.5.2 TGT/PGT

सनेही' जी ने 1990 में केंद्रीय विद्यालय, ज्योतिपुरम, जम्मू कश्मीर टीजीटी हिन्दी पद पर कार्यरत

चित्र 3.5.2.1 केंद्रीय विद्यालय में प्राचार्य के रूप में कार्य करते हुए डॉ. गयाप्रसाद 'सनेही'

हुए। अपने लगन शीलता के बल पर उनकी नियुक्ति सेंट्रल स्कूल संगठन, दिल्ली के साक्षात्कार आधार पर

दिसंबर 1994 में हिन्दी प्रवक्ता पद (पीजीटी) पर हुई| यह नियुक्ति जम्मू संभाग में हुई इस पद पर इन्होंने सन् 1990 से 1999 तक केंद्रीय विद्यालय में अपनी सेवाएं दी।

जम्मू- कश्मीर के प्रमुख संस्मरण एवं संस्मरणीय स्थल
(सनेही' जी की जुबान से)

केंद्रीय विद्यालय ज्योतिपुरम् और मीरां साहिब में कार्यरत रहते हुए, मुझे अनेक बार जम्मू-कश्मीर के प्रसिद्ध मंदिरों और पर्यटक स्थलों में भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी अधिकांश यात्राएं सड़क मार्ग से ही की है। सन् 1835 में महाराज गुलाब सिंह द्वारा निर्मित रघुनाथ मंदिर, सन् 1883 में महाराज रणवीर सिंह द्वारा बनवाए गए, रणवीरेश्वर मंदिर, जम्मू से 3.5 किलोमीटर दूर प्राकृतिक शिवलिंग का महा केन्द्र 'पीर खो' तवी नदी के किनारे पहाड़ी पर स्थित 'अमर महल म्यूजियम' जम्मू से 4 किलोमीटर दूर सर्वाधिक पुराना किला 'बागे बहू' आदि स्थलों पर सपरिवार जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जम्मू से 108 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित 'पतनी टॉप' एक विश्व प्रसिद्ध स्थल है जो वर्ष पर्यंत ठंडा रहता है। कश्मीर जाते समय पर दिसंबर माह की बर्फबारी आज भी मस्तिष्क में यदा-कदा कौंध सी जाती है। यहाँ बर्फ-पिण्ड के अवरोध के कारण एक सप्ताह झुग्गी-झोपड़ियों और खपरैलों में गुजारना पड़ा था। जम्मू से वैष्णो देवी की दूरी 42 किलोमीटर है। यहाँ तीर्थयात्रियों और पर्यटकों का प्रायः जमावड़ा लगा रहता है। मैंने कई बार सपरिवार वैष्णो देवी के समतलीय क्षेत्र पहुंचकर वहाँ से 14 किलोमीटर की पैदल आरोही यात्राएँ की, कभी भी पिट्ठू, खच्चर, या पालकी का सहारा नहीं लिया। जम्मू में और भी अनगिनत स्थल और स्थान हैं। जो मेरे अवचेतन मन में बसे हुए हैं। जम्मू से 100 किलोमीटर दूर **'शिवखोड़ी'** नामक स्थान कैसे भूल सकता हूं?

जहाँ पर भगवान शिव के दर्शन हेतु संकीर्ण गलियारा होने के कारण नीचे बहते हुए पानी में 50 मीटर लेट कर जाना पड़ता है। जहाँ साँस लेने में कठिनाई होती है। शिव-दर्शन के उपरांत वापसी में बस छूट गई थी। केंद्रीय विद्यालय के अपने दस शिक्षक साथियों के साथ सायं 6:00 बजे से लेकर रात 12:00 बजे तक पैदल चले थे, तब कहीं दूर पहाड़ी में एक होटल नजर आया, वहाँ रात 2:00 बजे भोजन करने के उपरांत विश्राम किया। मैंने यात्रा संबंधी समस्याओं को लेकर एक लंबी कविता लिखी थी, जिसकी पाण्डुलिपि खो जाने के कारण आज वह सस्वर कविता चेतन मन से प्रायः दूर है।

वैष्णों देवी **'शिवखोड़ी'** नामक स्थान जम्मू

जम्मू में रहते हुए कार्यवाहक प्राचार्य के रूप में श्रीनगर केंद्रीय विद्यालय जाने का भी सौभाग्य हासिल हुआ। श्रीनगर में डल झील के साथ साथ यहाँ से 8 किलोमीटर दूर **'नगीन झील'** के भी दर्शन हुए। यहाँ तक पहुंचने के लिए सबसे छोटा रास्ता हजरत बल की ओर से है। इसके नीले पानी तथा चारों ओर अंगूठी की तरह दिखने वाले पेड़ों के झुंड के कारण इसका नाम 'नगीन' पड़ा है ।यह झील नवरत्नों की याद दिलाती है । श्रीनगर से लगभग 3 किलोमीटर दूर 'शंकराचार्य' मंदिर है जो शहर से 1000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। उसे तख्त-ए-सुलेमान के नाम से जाना जाता है। शहर से 11 किलोमीटर दूर 'परी महल' है। कहा जाता है कि किसी जमाने में यह बौद्ध मठ था। मुगल बादशाह शाहजहाँ के बेटे दारा शिकोह ने इसे ज्योतिष के एक विद्यालय के रूप में बदल दिया था। मैं इस दुर्गम स्थान पर अकेले नहीं जा सकता था। यह 1998 की बात है मैं एक बी.एस.एफ कमांडर महोदय के साथ कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के साथ वहाँ पहुँचा था। मेरी फौजी गाड़ी

मध्य में थी उसके आगे-पीछे सात-सात गाड़ियाँ बड़ी फर्राटे के साथ चल रही थी। शंकराचार्य मंदिर के चबूतरे में बैठकर मैंने कमांडर महोदय तथा उनके अन्य साथियों को दारा शिकोह से सम्बन्धित एक दृष्टांत सुनाया, जो इस प्रकार है—

"मुगल सम्राट शाहजहाँ के चार बेटे थे– दारा (43वर्ष), शाह शुजा (41वर्ष), औरंगजेब (39वर्ष) तथा मुराद(33वर्ष) उनमें दारा सर्वाधिक शिक्षित था। वह महान साहित्य-प्रेमी और उदार था। उस पर सूफियों और हिंदू वेदांतियों का अधिक प्रभाव पड़ा। उसने फारसी ग्रंथों का खूब अध्ययन किया था, कुरान की हर आयत उसकी जबान पर थी। किंतु बंदे और खुदा के बीच जो सह-सम्बन्ध होना चाहिए, वह उन ग्रंथों में दारा शिकोह को बिल्कुल नहीं मिला। वह अपनी ज्ञान-पिपासा को शांत करने के लिए धर्म नगरी काशी (वर्तमान वाराणसी) गया। वहाँ उसने आचार्यों का संसर्ग पाकर देववाणी संस्कृत सीखी। उसने 17 साल तक अनवरत् उपनिषदों का अध्ययन किया। उसने स्वीकार किया कि भारतीय साहित्य में उपनिषद ही वे ग्रंथ हैं जो आत्मा- परमात्मा विषयक जिज्ञासा को शांति प्रदान कर सकते हैं। उसने स्वयं उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया और संस्कृत के तर्ज पर 'इलोपनिषद' लिखा। ईश्वर के प्रति समर्पण भाव व्यक्त करते हुए उसने लिखा है—

"हे च फिकर मत कर्तव्यं
कर्तव्यं जिकरे खुदा
खुदा ताला प्रसादेन
सर्वकार्यं फतेह भवेत्।

'सनेही' सर व उनकी धर्म पत्नी

अर्थात हे मानव तू किसी प्रकार की चिंता मत कर आगर कर्म के नाम पर कोई चीज करना है तो केवल खुदा का स्मरण कर। खुदा ताला की कृपा से हर कार्य में विजय प्राप्त होगी।"इस दृष्टांत को सुनकर कमाण्डर के. के. दहिया तथा उनके समूह के अन्य साथियों ने प्रसन्नता व्यक्त की, आह्लाद से झूम उठे तथा तालियां बजाकर मेरा स्वागत किया। अंत में सहर्ष हम लोगों ने वहाँ से प्रत्यागमन किया अर्थात् लौट आए। मैं श्रीनगर बी.बी. कैंट केंद्रीय विद्यालय नंबर 1 में प्राचार्य था। वहीं रहते हुए कश्मीर की डल झील, बुलर झील, चश्मा शाटी, निशात बाग, भट्टन,

अच्छावल बेरीनाग, चरारे शरीफ, गुलमर्ग, पहलगाम,आदि स्थलों झीलों एवं झरनों का नजदीक से अवलोकन किया था। बी.बी. कैंट (बदामी बाग छावनी) परिसर में चीड़ वृक्षों का बहुत बड़ा घना बाग था, बादाम के पेड़ थे। जब शीतल-मंद-सुगंध बयार चलती थी तो चीड़ के वृक्ष चतुर्दिक हिलने-डुलने लगते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो झुक-झुक कर हमें सलामी दे रहे हों। चीड़ और बादाम के पेड़ों की यह सौम्यमयी हरकत देखकर सन् 1998 में मैंने ब्रज भाषा में छंद रचा था, जो इस प्रकार है—

"जागे भाग वसुधा के एक बार फेरि जब,

पावस की बूँद आँख मूँद आई धरनी ।

इत ते प्रसन्न द्रुम चीड़ औ पलासन के,

भाँगड़ा के नृत्य में प्रमत्त है डोगरनी।

श्वेत-स्याम-रतनार फूल खिले कचनार,

मानो कश्मीर की कुँवरी भई बरनी।।"

इस प्रकार जम्मू-कश्मीर के संस्मरण को लेकर बहुत सारे मोहक दृष्टांत हैं। एक और दृष्टांत देकर मैं अपनी वाणी को विश्राम देना चाहूंगा। उन दिनों सन् 1996 के दरम्यान मैं केंद्रीय विद्यालय मीरां साहिब पी.जी.टी हिन्दी पद पर कार्यरत था। उस समय केंद्रीय विद्यालय जम्मू संभाग के निर्देश पर अनेक प्रकार के अन्तर विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रतियोगिताएं आयोजित हुआ करती थीं। दिसंबर का महीना था। मैं अपने विद्यालय के दो बच्चों को सांस्कृतिक प्रतियोगिता में सहभाग कराने हेतु यहाँ से 10 किलोमीटर दूर स्थित एक अन्य केंद्रीय विद्यालय लेकर पहुंचा।

कार्यक्रम प्रारंभ होने से पूर्व किसी अन्य केंद्रीय विद्यालय (शायद केंद्रीय विद्यालय नगरोढा) की कक्षा 12वीं की एक छात्रा ने मुझसे एक सवाल किया। सवाल बड़ा सरल किंतु बेहद कठिन था। उसने 'सर' शब्द का संबोधन करते हुए मुझसे पूछा– 'दुल्हन ही दहेज है, दहेज लेना पाप है।' इसका क्या अर्थ है?मैंने समान्य रूप से बिना समझे-बूझे है सपाट-बयानी के तौर पर जवाब दिया-" दुल्हन को ही दहेज मानकर उसे स्वीकार कर लो, अलग से दहेज लेने की क्या जरूरत है?" छात्रा ने कहा-" यह उत्तर असंतोषजनक है।" मैंने कहा संतोषजनक उत्तर क्या होगा?" उसने तपाक से जवाब दिया, "जब दुल्हन ही दहेज है और दहेज लेना पाप है तो दहेज रूपी

दूल्हन को नहीं ग्रहण करना चाहिए अर्थात विवाह के बाद दुल्हन को घर नहीं ले जाना चाहिए क्योंकि ऐसा करना पाप है।" मैंने सोचा कि यह छात्रा काव्य की तीन शक्तियों–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना– में से लक्षणा शक्ति में बात कर रही है। ईंट का जवाब पत्थर से देना मुझे भली भाँति आता था। मैंने अभिधा और लक्षणों को छोड़कर व्यंजना में समझाते हुए कहा– 'दहेज' शब्द के दो अर्थ हैं—

1. दहेज = निजी संपत्ति
2. दहेज = वह धन या आभूषण जो कन्या पक्ष की तरफ से वर पक्ष को उपहार के रूप में दिया जाता है, उसे दहेज कहते हैं।

उपर्युक्त द्विअर्थक व्याख्या के आधार पर मैंने पुनः समझाते हुए कहा कि दुल्हन निजी सम्पत्ति है, उसे तो ससम्मान ग्रहण करना चाहिए, लेकिन कन्या पक्ष से दबाव डालकर उपहार (दहेज) स्वरूप जो अलग से लिया जाता है, उसे लेना पाप है। यह सुनकर वह छात्रा खुशी से नाच उठी और दोगुने उत्साह से प्रतियोगिता में भाग लेने चली गई।

3.5.3 एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित नेट की परीक्षा जम्मू विश्वविद्यालय में 1990 हुई। परीक्षा पास करने के उपरांत उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग द्वारा लिए गए साक्षात्कार के आधार पर उनका चयन असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हो गया। 'सनेही' जी 2000-2010 तक हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं 2010-2019 तक अतर्रा पी.जी. कॉलेज अतर्रा बाँदा विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे।

3.5.4 प्राचार्य

ये वर्तमान में जुलाई 2019 से श्री राम मनोहर यादव पी.जी. कॉलेज, फतेहपुर में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। इससे सिद्ध होता है, कि अगर व्यक्ति विभिन्न संघर्षों में संयम, अनवरत रूप से संलग्न रहते हुए कार्य करे एवं उससे कभी पीछे न हटे बल्कि उसकी वृत्ति लक्ष्य संधान पर केन्द्रित रहे तो अन्ततोगत्त्वा व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर लेता है|

3.6 पुरस्कार

डॉ० गयाप्रसाद 'सनेही' को राष्ट्रिय कवि सम्मेलन कवि गोष्ठियों में आमंत्रित कर सम्मानित किया जाता रहा है जिनमे से कुछ का विवरण निम्न है—

1. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन बेड़ी पुलिया, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश काव्य पाठ , वर्ष 2005
2. पंडित JN कॉलेज बाँदा B.Ed. विभाग में काव्य पाठ, वर्ष 2005
3. डॉ० अश्विनी कुमार शुक्ला वास 125 आवास विकास कॉलोनी बाँदा में काव्य पाठ, वर्ष 2006
4. केदार सिंह स्मृति न्यास बाँदा बाबू केदारनाथ अग्रवाल के आवास में काव्य पाठ, वर्ष 2007
5. रामलीला मैदान बाँदा GIC के पास काव्य पाठ, वर्ष 2007
6. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन बाबूलाल चौराहा बाँदा काव्य पाठ, वर्ष 2007
7. आवासीय कवि गोष्ठी नरैनी रोड, अतर्रा, बाँदा सन काव्य पाठ एवं अध्यक्षता, वर्ष 2008

चित्र 3.6.1 भारत रत्न स्व. अटल बिहारी बाजपेयी की पुण्यतिथि पर काव्यांजलि कार्यक्रम अतर्रा (बांदा)

8. आवासीय कवि गोष्ठी बिसंडा रोड, अतर्रा, बाँदा काव्य पाठ एवं अध्यक्षता, वर्ष 2008
9. राष्ट्रीय कवि गोष्ठी, नरैनी, बाँदा काव्य पाठ, वर्ष 2008
10. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, खागा जनपद, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश काव्य पाठ, वर्ष 2009
11. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन टाउन हॉल, खागा, फतेहपुर काव्य पाठ, वर्ष 2010
12. राष्ट्रीय कवि गोष्ठी पटेल चौराहा, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश काव्य पाठ, वर्ष 2011

13. कवि गोष्ठी आवास, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश काव्य पाठ, वर्ष 2012

14. काव्य गोष्ठी पांडे आवास जनपद, फतेहपुर काव्य पाठ वर्ष 2013

15. लघु काव्य गोष्ठी तहसील खागा के सामने, फतेहपुर काव्य पाठ, वर्ष 2014

16. काव्य गोष्ठी वार्ता सारंग होटल, बाँदा काव्य पाठ, वर्ष 2015

17. कवि गोष्ठी ब्रम्ह विज्ञान इण्टर कॉलेज, अतर्रा काव्य पाठ समीक्षा, वर्ष 2016

18. अखिल भारतीय कवि सम्मेलन यदुवंश नगर, फतेहपुर वार्ता काव्य पाठ समीक्षा, वर्ष 2019

चतुर्थ अध्याय

साहित्य सर्जना

4.1 प्रकाशित पुस्तकें

4.1.1 भाषायी संकट विखण्डनवाद और मूल्यह्रास

डॉ० गया प्रसाद सनेही की इस लेख में भाषायी संकट पाश्चात्य भूमण्डलीकरण एवं आधुनिकता का वर्णन किया गया है। कि पहले आवश्कता अविष्कारकि जननी हुआ करती थी, आज अविष्कार से आवश्यकता पैदा की जा रही है। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कालाधन, कुपोषण, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति, एड्स, दहेजप्रथा, बालश्रम, आतंकवाद विखंडनवाद आदि अनेक ऐसी चुनौतियां हैं। जो पूरे समाज को संवेदनशील होकर नए ढंग से आंदोलित और प्रताड़ित कर रही हैं। कवि ने वैश्वीकरण से प्रभावित होकर भटकाव के कारण, वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है। यह देश का दुर्भाग्य है कि अंग्रेज तो चले गए किंतु सर्प की भांति अपनी अंग्रेजियत केचुल छोड़ गए, और इसका वर्णन 'भारतीय भाषाओं का भविष्य' नामक लेख में मिलता है, कि कला साहित्य का ज्ञान हो जाने के बाद हम लोग पश्चिमी असर में चले जाते हैं-

"मैं चाहता हूं मुझे माँ जैसा प्यार मिले,

मैं चाहता हूं मुझे माँ जैसा त्याग मिले,

मैं चाहता हूं मुझे माँ जैसा परवाह मिले,

मैं सब कुछ माँ जैसा चाहता हूं,

मगर मैं माँ नहीं चाहता"

इस लेख की उपरोक्त पंक्तियों में आधुनिक समाज के बारे में वर्णन किया है। वर्तमान समाज में व्याप्त नशाखोरी शोषण ने मानव जाति के मोह को भंग कर दिया है। परिणामत: आज पति-पत्नी के बीच आन्तरिक

कलह, पिता-पुत्र के बीच तनाव है, भाई-बहन के बीच नैतिकता का प्रश्न चिन्ह है, भाई-भाई के बीच जयचंदी रणनीति है, सेवक स्वामी के बीच आज्ञा की चहारदीवारी है, पिता पुत्र को सन्मार्ग पर ले जाना चाहता है, किंतु पुत्र उस तरफ 1 इंच भी अपने कदम नहीं बढ़ाना चाहता है। वह भारतीय जीवन मूल्यों के आलोक पर्व का मानवीय मूल्य न तो जानता है, और न ही जानना चाहता है। उसका सीधा दो टूक जवाब होता है –

"यह कहकर बेटा करें, उल्टे सीधे काम

है उसूल इस दौर में, किस चिड़िया का नाम"

296 इक्कीसवीं सदी का भारत : मुद्दे, विकल्प और नीतियां

युद्धों तथा वर्तमान समाज में व्याप्त नशाखोरी, शोषण ने मानव जाति के मोह को भंग कर दिया है। परिणामतः आज पति–पत्नी के बीच आन्तरिक कलह है, पिता–पुत्र के बीच तनाव है, भाई–बहन के बीच नैतिकता का प्रश्न–चिह्न है, भाई–भाई के बीच जैचंदी रणनीति है, सेवक–स्वामी के बीच अवज्ञा की चहारदीवारी है, दलित–गैरदलित के बीच वर्णभेद का समुंदर लहरा रहा है। डॉ0 सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल' के शब्दों में– " भारतीयता की हानि हम अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मार कर रहे हैं। हमारा देश 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' से चला, उसका पालन करता हुआ–'प्रातकाल उठि के रघुनाथा, मात पिता गुरू नावहिं माथा' पर आया, फिर हलो–हाय गुड मार्निंग पर आया अब 'फादर्स डे–मदर्स डे' मानकर वृद्धाश्रम में माता–पिता को धकेलने वाली पीढ़ी को एक आत्मकेन्द्रित विवाहित युवा पुत्र यह कहने में बेशर्मी अनुभव नहीं करता–

"मैं चाहता हूँ मुझे माँ जैसा प्यार मिले,
मैं चाहता हूँ मुझे माँ जैसा त्याग मिले,
मैं चाहता हूँ मुझे माँ जैसा परवाह मिले,
मैं सब कुछ माँ जैसा चाहता हूँ।
मगर मैं माँ नहीं चाहता।"'[16]

पिता–पुत्र को सन्मार्ग पर ले जाना चाहता है किंतु पुत्र उस तरफ एक इंच

ऐसी अवस्था में अगर कुटुंब तथा विश्व को ग्राम के रूप में आत्मसात करना है। जो भारत की विशेषता रही है **"वसुधैव कुटुंबकम"**तो वैश्वीकरण को हाशिए पर रखते हुए क्षमता के विधान को क्षितिज के रूप में विस्तारित करना पड़ेगा।

4.1.2 परिधि से केन्द्र की ओर (नारी-चिन्तन)

कवि ने इस लेख में गणित शास्त्र में केन्द्र और परिधि का कदंब-कोरक सम्बन्ध की भांति नारी की स्थिति को परिभाषित किया है कि मानव जगत का हर व्यक्ति केन्द्र की ओर बढ़ कर संचालन की बागडोर संभालना चाहता है। ठीक यही स्थिति भारतीय समाज में हाशिए पर यात्रा करने वाली नारियों की है जो साहस और हिम्मत के साथ केंद्रीय संचालन की ओर निरन्तरता के साथ अग्रसर है। कवि नारी की स्थिति का चिन्तन

करते हुए, गुप्त काल और राजपूत काल में स्त्रियों की दशा और अधिक दयनीय और निरीह थी। इसी के प्रभाव स्वरूप सामंती राजाओं की विलास प्रियता के कारण मुगलकाल में पर्दा प्रथा बाल विवाह, बहुविवाह, वेश्यावृत्ति आदि सभी अपनी चरम सीमा लांघ को गए थे। परिणामतः हर वर्ग की स्त्रियों ने अपनी अस्मिता को बचाने के लिए पर्दा प्रथा को अपरिहार्य कवच समझा आज वही पर्दा प्रथा सम्पूर्ण भारत में अपने सबाब पर है। जिस देश में सामंती व्यवस्था ज्यादा दिन नहीं रही। वैदिक काल में अपने परिवार में पत्नी का क्या स्थान था।

3

नारी-चिन्तन :
परिधि से केन्द्र की ओर

डॉ. गयाप्रसाद यादव 'सनेही'
असिस्टेण्ट प्रोफेसर : हिन्दी अतर्रा
पी.जी. कॉलेज,अतर्रा (बाँदा),

गणित शास्त्र में केन्द्र और परिधि का कदम्ब-कोरक सम्बन्ध है, किन्तु महत्त्व की दृष्टि से परिधि की तुलना में केन्द्र का स्थान सर्वोच्च है। परिधि तो किसी वृत्त या गोला के चारों ओर खींची जाने वाली एक रेखा मात्र है किन्तु केन्द्र एक सत्ताधारी मध्यवर्ती बिन्दु है अथवा साहित्य की भाषा में वह मूल या प्रमुख स्थान जहाँ से चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए कार्यों का प्रबन्ध या संचालन किया जाए, उसे केन्द्र कहते हैं। मानव-जगत का हर व्यक्ति केन्द्र की ओर बढ़कर संचालन की बागडोर संभालना चाहता है। ठीक यही स्थिति आज भारतीय समाज में हाशिए पर यात्रा करने वाली नारियों की है। आज वह फिर साहस और हिम्मत के साथ केन्द्रीय संचालन की ओर निरन्तरता के साथ अग्रसर है। परिधि से केन्द्र की ओर किसी राजमार्ग पर चलने के समान सरल कार्य नहीं है, बल्कि मूल तक पहुँचने के लिए यह नितान्त संकीर्ण, कण्टकाकीर्ण एवं जोखिम भरा पगडंडी मार्ग है।

4.1.3 चन्देल कालीन फागों का सांस्कृतिक अनुशीलन

चन्देल कालीन फागों का सांस्कृतिक अनुशीलन

गयाप्रसाद 'सनेही'

'फाग' शब्द की उत्पत्ति 'फलउ, गुक् च' अर्थात् 'फल्गु' से मानी गई है, जिसका अर्थ है– 'होली का त्योहार, वसन्तोत्सव'।[1] डॉ. भोगीलाल सांडेसरा ने 'फाग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'फला' से मानी है– फला झ फग्गु (प्राकृत) झ फागु[2] और कांतिलाल व्यास ने संस्कृत फाल्गुन से- फाल्गुन झ फग्गु झ फागु।[3] आचार्य श्री श्यामसुन्दर बादल ने 'बुन्देली के फाग साहित्य' नामक ग्रन्थ में 'फाग साहित्य किसे कहते हैं?' शीर्षक लेख में इसकी विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा है कि संस्कृत की 'फल' धातु से 'फल्गु' शब्द बना है और उससे रूपान्तरित होता हुआ फल्गु झ फग्गु झ फाग बन गया है।[4] इन समस्त तथ्यों से यह बात प्रकाश में आती है कि फाग शब्द चाहे फल या फला तथा चाहे फाल्गुन या फल्गु का रूपान्तरण हो, पर प्राकृत 'फग्गु' शब्द सभी रूपों में मिलता है। अतः यह प्राकृत के 'फग्गु' का ही रूपान्तरण है, अपभ्रंश का नहीं। प्राकृत 'फग्गु' और देशी नाममाला में 'फग्गु' का अर्थ 'वसंत का उत्सव' ही बताया गया है। इस आधार पर फागु या फाग का अर्थ 'वसन्तोत्सव' ही ठहरता है। हिन्दी में 'फाग खेलना' एक मुहावरा है, जो 'रंग डालने' के ही अर्थ में प्रयुक्त होता है। विवाहोत्सव में भी विदाई के समय कन्या पक्ष की तरफ से वर पक्ष के लिए रंग डालने की प्रथा है, किन्तु वहाँ इसे 'फाग होना' कहते हैं। बुन्देलखण्ड में आज भी 'फाग' शब्द का प्रयोग 'रंगोत्सव' के उपलक्ष्य में होता है। आचार्य श्यामसुन्दर बादल ने फाग की पैमाइश करते हुए कहा है–"बुन्देली फाग-गीत बुन्देलखण्ड जनपद के वे लोकगीत हैं, जो वसंतोत्सव, होलिकोत्सव, फागोत्सव या रंगोत्सव पर गाये जाते हैं।"[5]

एक अहं सवाल यह उठता है कि बुन्देलखण्ड में 'फाग' जैसी मनोरम, लालित्य प्रधान और पुरातन समृद्ध परम्परा का उदय कब और कैसे हुआ? इस सम्बन्ध में चन्देल काल में एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख मिलता है। गुजरात नरेश सिद्धराज जयसिंह ने चन्देलवंशीय महोबा नरेश मदनवर्मन (1129 - 1165 ई0) के वैभव, उत्कर्ष और उसकी कीर्ति-कौमुदी को सुन रखा था। वह मदनवर्मन को पराजित करके उसके

बुन्देलखण्ड में साहित्य की परंपरा / 133

कवि **'चंदेल कालीन फागों का सांस्कृतिक अनुशीलन'** नामक शीर्षक में बुंदेलखंड में फाग जैसी मनोरम लालित्य प्रधान और पुरातन संबंध परंपरा का उदय कब और कैसे हुआ का वर्णन इस लेख में किया है| कवि महोबा के बसंतोत्सव का ध्यान करते हुए कहा है, कि उस अंचल विशेष में बसंतोत्सव सर्वाधिक प्रिय है, सभी लोग जातिगत भेदभाव भूलकर परस्पर प्रेम के उत्सव में शरीक होते हैं और इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के काव्य पाठ संगीत नृत्य नाटक भाग आज सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं| इस रंगीले अवसर पर अनुपम श्रंगार से सजी-धजी अंगना और मनमोहक युवक स्वभाव से अनुरोध में रहते हैं| फाग मूल रूप से लोक साहित्य और संस्कृति में प्रचलित लोक गीत या ग्राम गीत की एक विशिष्ट विधा है| आदिकाल में भागों को लिखित परंपरा कोई भी एक प्रति उपलब्ध नहीं है फिर भी इस का उद्भव 10 वीं शताब्दी के आसपास बुंदेलखंड में हो चुका था| कवि ने फाग की पैमाइश करते हुए कहा है कि " बुंदेली फाग गीत बुंदेलखंड मंडल के वो लोकगीत है, जो बसंतोत्सव होलिकोत्सव फागोत्सव या रंगोत्सव पर गाये जाते हैं"

"चन्दन खौरे हरिजू खो सोहै,टिपिकन बीच हसै।

चलो आउत। नैनन सुरमा हरी जो खों सौंहैं ,

भौहंन बीच हसैं। चलो आउत।"

उपर्युक्त उदाहरण में कुष्ण के रूप सौंदर्य का मर्यादित चित्रण है। चन्दन का खैर (चन्दन का आडा धनुष्कार तिलक या त्रिपुण्ड) तथा टिमकी (छोटा टीका या गोल बिंदी) लगन अत्यन्त प्राचीन है। जबकि सुरमा का प्रयोग मध्यकालीन हो सकता है, कजरा के स्थान पर 'सुरमा' ने अपना अधिकार जमा लिया हो। जैसे आज कल सौंदर्य के अंतर्गत कजरा और सुरमा के स्थान पर आई लाइनर आने लगा है। किन्तु उक्त उदाहरण में प्रयुक्त क्रियाये प्राचीन अर्थात चन्देलकालीन है। चन्देलों ने लगभग चार शताब्दियों तक बुन्देलखण्ड में शासन किया। वे केवल महान् विजेता तथा सफल शासक ही न थे। अपितु ललित कलाओं के प्रसार तथा संरक्षण में भी वे पूर्ण दक्ष थे। उनके शान्तिपूर्ण शासन तथा देश की भौगोलिक स्थिति ने भी इस

दिशा में पूर्ण योग दिया और खजुराहो के मंदिरों के रुप में कला अपने चरम लक्ष्य तक पहुंच गई थी। चन्देल काल में जनता की समृद्धि ने ललित कलाओं के इतिहास में एक अमिट छाप डाल दी थी। चन्देल युग में वास्तुकला तथा मूर्तिकला उन्नति के चरमबिन्दु पर पहुँच गई थी और उनके उत्कृष्ट नमूनों का बुन्देलखण्ड में बाहुल्य है।

4.2 प्रकाशित कविताएँ

4.2.1 कोरोना काव्य संग्रह (कोरोना से संवाद)

सुनो को रो ना

सुनो, कोरोना !
जानते हो ठाठ क्या है ?
ठाठ एक ढाँचा है
छरहरेदार लकड़ियों का
बण्डलनुमा साँचा है
जिससे तनते हैं छप्पर
सजते हैं मण्डप
व मड़हे बनते हैं
कुटीर व डेरे।
ऐ ..... कोरोना ! कोरो.......ना,
नहीं है तेरे पास यकोरो या कोरउवा
अर्थात् पलाश का आच्छादन
जिसकी पतली–लंबी छड़ियों से
तू बना सके निराला ठाठ
और छा सके छप्पर या खपरैल
कर सके ब..से..रा
या विलम सके उसकी छाया के नीचे
थके बटोही की तरह।
और, सुनो कोरोना होकर दत्तचित्त—
आ रहे हैं 'ग्रीष्म महराज'
जिनकी भीषण आग
तुझे जलाएगी–झुलसाएगी तपेगी
यह ततूरी उगलेगी करारी आग टपर...टपर ...

काव्य (241) गया प्रसाद 'सनेही'

कोरोना से संवाद

ऐ कोरोना !
को ? ——— रोना,
कौन रोएगा ?
तेरे विदा होने के बाद!
तूने रुलाया है
जन–जन को पिलाया है
मौत की घूँटी और
दिया है अवसाद।
तेरा एजेण्डा बजाता है
खतरे की घंटियां
तेरे कार्यनामें कुत्सित हैं,
घिनौने हैं
इतिहास के काले पन्नों पर
लिखें जाएंगे लाल स्याह से अब
तू जा अपने लाव–लश्कर के साथ।
तू जहाँ जाएगा
दुत्कारा जाएगा
वहाँ से खदेड़ा जाएगा
तू रोएगा बैठ
अपनी मुर्दा प्रयोगशाला में
पकड़कर दोनों हाथ से
अपना अभागा माथ।
कौन देगा तेरा साथ ?
न मैं न वह।

(240) गया प्रसाद 'सनेही'

'सनेही' जी की दो प्रकाशित कविताएँ (कोरोना से संवाद, सुनो को रो ना) है, इक्कीसवीं सदी को बीसवां साल लगते ही मानव सभ्यता सकते में आ गई। एक विषाणु ने धरती से अंतरिक्ष, मंगल और चांद का सफर तय कर इतराती दुनिया को धप्पा दे दिया और सब सकते में आकर रुक गए. दुनिया की सारी बड़ी इकाई सबसे छोटी इकाई घर और परिवार में सिमट गई घर लौटी इस दुनिया का फ्रेम इतना बड़ा हो चुका था।

कि उसे खबरों के रूप में टेलीविजन के स्क्रीन और अखबार के पन्नों पर समेटना असम्भव सा था। जब बिहार के सीतामढ़ी जिले से हिमालय पर्वत की सबसे ऊंची चोटी दिखने लगे, नदियों के पानी का रंग नीला हो जाए। वहीं दूसरी तरफ दुनिया भर में हुई हजारों मौतों से हुई हताशा को कैसे देखा जाए? वह विधा कविता ही हो सकती है। जो समझाए कि आंखों की रोशनी बढ़ी है। या प्रकृति से धूल छंटी है। कोरोना के बाद जब

कल क्या होगा? कोई नहीं जानता के अनिश्चित समय में जीवन जीने के नए रास्ते तलाशता दिखता है।

कोरोना से संवाद

ऐ कोरोना!

को ? --- रोना,

कौन रोएगा?

तेरे विदा होने के बाद!

तूने रुलाया है

जन-जन को पिलाया है

मौत की यूंटी और

दिया है अवसाद।

तेरा एजेण्डा बजाता है

खतरे की घंटियां

तेरे कार्यनामें कुत्सित हैं,

घिनौने हैं

इतिहास के काले पन्नों पर

लिखें जाएंगे लाल स्याह से अब

तू जा अपने लाव-लश्कर के साथ।

तू जहाँ जाएगा

दुत्कारा जाएगा

वहाँ से खदेड़ा जाएगा

तू रोएगा बैठ

अपनी मुर्दा प्रयोगशाला में

पकड़कर दोनों हाथ से

अपना अभागा माथ।

कौन देगा तेरा साथ?

न मैं न वह।

सुनो को रो ना

सुनो, कोरोना!

जानते हो ठाठ क्या है?

ठाठ एक ढाँचा है

छरहरेदार लकड़ियों का

बण्डलनुमा साँचा है

जिससे तनते हैं छप्पर

सजते हैं मण्डप

व मड़हे बनते हैं

कुटीर व डेरे।

ऐ..... कोरोना ! कोरो.......ना.

नहीं है तेरे पास यकोरो या कोरउवा

अर्थात् पलाश का आच्छादन

जिसकी पतली-लंबी छड़ियों से

तू बना सके निराला ठाठ

और छा सके छप्पर या खपरैल

कर सके ब..से..

रा या विलम सके उसकी छाया के नीचे

थके बटोही की तरह।

और, सुनो कोरोना होकर दत्तचित्त—

आ रहे हैं ग्रीष्म महराज'

जिनकी भीषण आग

तुझे जलाएगी-झुलसाएगी तपेगी

यह ततूरी उगलेगी करारी आग टपर...टपर ...

4.2.2 एक लड़की

०२ मार्च १९५६ में उ.प्र. के फतेहपुर जिले में जन्मे। एम.ए.एल.टी., पी-एच.डी.तक शिक्षा प्राप्त। काव्य संग्रह 'अनुभूति के स्वर' में प्रकाशन। संप्रति : अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता।

❖ गया प्रसाद 'सनेही'

एक लड़की

बहुत रंग के चाँद तारे सजाता,
बहुत पौध कलमें धरा पर उगाता;
खुशियाँ मनाने का साहस जुटाता,
फिर भी मेरा मन सदा तड़फड़ाता,
कभी सुख के निद्रा में सोने न पाता;
कारण है जिसका निवारण नहीं है,
व्यथा की कथा यह अकारण नहीं है,
मेरी एक लड़की बड़ी सीधी सादी,
नवयुग के मेले में वह खो गई है,
दुनिया में जिन्दा कि या सो गई है।
इकहरा बदन रंग गोरा है उसका;
कुल-शील-भूषण ही भूषण है जिसका,
सच्चाई की एक बेदाग साड़ी,
तन में लपेटे हुए है बेचारी,
दुबली है लेकिन वह अबला नहीं है,
सबला है लेकिन वह चपला नहीं है;
रमा, इन्दिरा, कोई कमला नहीं है;
लक्ष्मी व दुर्गा व विमला नहीं है;
बहुत मैंने ढूंढ़ा, बहुत मैंने खोजा,
मरुस्थल, वनस्थल, मरुद्यान जाकर,
बहुत मैंने पूछा चटर्जी, बनर्जी,
मुखर्जी व दरजी की दुकान जाकर।
आलय, देवालय, महाऔषधालय
हिमालय, शिवालय और वन्दनालय
निर्झर, सरोवर, नदी, नाल, पोखर;

काश्मीर से अन्तरीप तक,
लघु द्वीपों से महाद्वीप तक,
मैंने सबसे बोला।
नागमती की भाँति विरह में,
दुनिया भर में डोला।
जन-जन के दिल में भी घुसकर,
मैंने उसे टटोला।
दुर्दिन में आँसू टपकाता,
फिरता रहा अकेला।
फिर भी पता लगा न उसका,
मुझको आया रंज;
झटपट पहुँचा नव दिल्ली में,
स्थित दरियागंज;
देखा बोर्ड तलाश-केन्द्र का,
हुआ हृदय में तब भावोदय-
मैंने कहा, "अध्यक्ष महोदय,
"गुमी हुई लड़की की कीमत, क्या तुमने पहचानी है ?
उम्र है कुछ हजार की, उसकी सही निशानी है।"
फिर मैं बोला - महामान्यवर, कृपया पता नोट कीजिये,
यदि मिल जाय कहीं पर श्रीमन्, निम्न पते पर भेज दीजिये।
नाम है उसका - 'मानवता'
सुनो मेरे यार
पता : संसार
लड़की : होनहार।

इस कविता में नारी के स्वर को तरजीह दी है इसमें नई पीढ़ी की बात है। नई पीढ़ी में नारी का संघर्ष, उनके जीवन की व्यथा और समस्याएँ। स्त्री प्रश्न को लेखक ने नए अंदाज के साथ प्रस्तुत किया है।

आज की दलित स्त्री भी अब शिक्षित और स्वाबलंबी होकर नया समाज बनाना चाहती है। समाज में स्त्रियों के प्रति पुरुषों का दृष्टिकोण बदले। भारतीय संस्कृति में बेटियां, स्त्री का महत्व लक्ष्मी के समान दिया जाता है, जिनका अस्तित्व धन, संपदा, वैभव, कार्य, पूजा, निष्ठा, शर्मा आदि में निहित होता है। भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ स्त्रियों का सम्मान का अधिकार सर्वप्रथम दिया जाता है, यानी बेटी का सम्मान सर्वप्रथम है. बेटी एक ऐसी संपत्ति है जो किसी के घर में पले, तो उसका सौभाग्य बन जाता है, बेटी के वजह से घर में सम्मान, प्रतिष्ठा, संपदा, आचरण, व्यवहार आदि का आगमन निरंतर बना हुआ रहता है।

एक लड़की

बहुत रंग के चाँद तारे सजाता,

बहुत पौध कलमें धरा पर उगाता;

खुशियाँ मनाने का साहस जुटाता,

फिर भी मेरा मन सदा तड़फड़ाता,

कभी सुख के निद्रा में सोने न पाता;

कारण है जिसका निवारण नहीं है,

व्यथा की कथा यह अकारण नहीं है,

मेरी एक लड़की बड़ी सीधी सादी,

नवयुग के मेले में वह खो गई है,

दुनिया में जिन्दा कि या सो गई है।

इकहरा बदन रंग गोरा है उसका;

कुल-शील-भूषण ही भूषण है जिसका,

सच्चाई की एक बेदाग साड़ी,

तन में लपेटे हुए है बेचारी,

दुबली है लेकिन वह अबला नहीं है,

सबला है लेकिन वह चपला नहीं है;

रमा, इन्दिरा, कोई कमला नहीं है;

लक्ष्मी व दुर्गा व विमला नहीं है;

बहुत मैंने ढूंढा, बहुत मैंने खोजा,

मरुस्थल, बनस्थल, मरुद्यान जाकर,

बहुत मेंने पृठा चटर्जी, बनर्जी,

मुखर्जी व दरजी की दुकान जाकर।

काश्मीर से अन्तरीप तक,

लघु द्वीपों से महाद्वीप तक,

मैंने सबसे बोला।

नागमती की भाँति विरह में,

दुनिया भर में डोला।

जन-जन के दिल में भी घुसकर,

मैंने उसे टटोला।

दुर्दिन में आँसू टपकाता,

फिरता रहा अकेला।

फिर भी पता लगा न उसका,

मुझको आया रंज;

झटपट पहुँचा नव दिल्ली में,

स्थित दरियागंज;

देखा बोर्ड तलाश-केन्द्र का,

हुआ हृदय में तब भावोदय

मैंने कहा, "अध्यक्ष महोदय,

“गुमी हुई लड़की की कीमत, क्या तुमने पहचानी है ?

उम्र है कुछ हजार की, उसकी सही निशानी है।"

फिर मैं बोला - महामान्यवर, कृपया पता नोट कीजिये,

यदि मिल जाय कहीं पर श्रीमन, निम्न पते पर भेज दीजिये।

नाम है उसका – 'मानवता'

आलय, देवालय, महाऔषधालय

हिमालय, शिवालय और बन्दनालय

'नझ़र, सरोवर, नदी, नाल, पोखर,

पता हेतु पीछे पड़ा हाथ धोकर ,

सुनो मेरे यार

पता : संसार

लड़की; **होनहार**

4.2.3 एक हमारी न्यारी हिन्दी

सर्जना - १

एक हमारी न्यारी हिन्दी

अगर आप से पूछे कोई,
भारत माँ के भाल की बिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।
नामकरण ले सिन्धु प्रान्त से,
काश्मीर मे बचपन बीता।
भवन बनाया मध्य देश में,
जन्में जहाँ राम औ' सीता।।
युवा हुई जब यू.पी., एम.पी.,
औ' बिहार की हुई बाशिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी;
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

जननी इसकी पालि, संस्कृत,
पुरुखों ने ऐसा ढाला।
आज समूचे भारत में यह,
घूम रही हिन्दी-बाला।।
शीश झुकाया कभी न इसने,
हुई कभी न शर्मिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

शिमला से भोपाल आगरा,
नैनीताल में छाई हिन्दी।
अम्बाला से भागलपुर तक,
पागल-सी पहुचाई हिन्दी।।
मिलीं अठारह बोलीं जिसमें,
खड़ी राज भाषा है हिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

विद्यापति की पदावली में,
सूरदास-ब्रजक्यारी में।
तुलसी के मानस में छाई;
मुक्तक कंठ बिहारी में।।
गंगा, सरयू, शिप्रा, झेलम,
और पुरातन कालिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

सुश्री वर्मा के गीतों में,
मीरा के गिरिधर नागर में।
जयशंकर के खण्डकाव्य में,
रत्नाकर के रस-सागर में।।
बहती रहती रात-दिवस यह,
हुई कभी न पाबन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

रोटी हिन्दी, कपड़ा हिन्दी,
और मकान सभी हिन्दी हैं।
तमिल, मराठी, उड़िया, असमी,
औ' कश्मीरी सब हिन्दी हैं।।
हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी,
बचा न कोई अब सिन्धी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

❖ लखन कालोनी (सरस्वती इण्टर कालेज के सामने) अतर्रा (बाँदा)

हिन्दी न सिर्फ भारत की पहचान है। बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिन्दी विश्व की सम्भवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। भारत मे आर्यों कि भाषा वैदिक संस्कृत थी। वैदिक संस्कृत में वेदों की रचना हुई और इसे देवनागरी भी कहां जाता है| संस्कृत में प्रसिद व्याकरण पाणिनी द्धारा रचित अष्ठाध्यायी सम्भव न हुआ तो उच्चारण अशुद्धि के कारण प्राकृत भाषा का जन्म हुआ। वैदिक संस्कृत का वैदिक काल की प्राकृत बदल कर दूसरी प्राकृत के रूप में पाली भाषा कहलायी। जिसमे बाद में चलकर बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ। हिन्दी को प्रयोजनमूलक कहने की आवश्यकता क्यों पड़ी? दरअसल हिन्दी का साहित्य बहुत पुराना है। यह भाषा संस्कृत के बहुत समीप है। आज भी संस्कृत के मूल शब्द हिन्दी में तत्सम और उनके विकृत रूप तद्भव नाम से उपयोग में है। अतः इसका इतिहास भी उसी अनुपात में पुराना व्याकरण सम्मत होना स्वाभाविक ही है। आज हिन्दी केवल शास्त्रीय लेखन की भाषा नहीं अपितु बाज़ार और कार्यालयी

काम-काज की भाषा है। रचनाकार ने सरल और सहज शब्दों में सृजन कर एक दुरूह कार्य को रोचक ढंग से प्रतिपादित किया है। यही इसकी मुख्य विशेषता है। यह उम्दा व भावप्रधान रचनाओं से परिपूर्ण संग्रह है। इसमें कविताएँ हैं, जो हर विषय को छूती हैं। चिन्तन और मनन के माध्यम से जो ताना-बाना बुना गया, वह काबिले तारीफ है। उसे बिना लाग-लपेट के सरलता से व्यक्त करना उत्कृष्ट रचनाकार की छवि दिखाता है। इसे पढ़े बिना पुस्तक को पढ़ना अधूरा रहेगा। आवरण अति सुन्दर है, जो संघर्ष की व्यथा बयाँ करता है| जो संग्रह के अनुरूप है। यह काव्य संग्रह अपने आप में पूर्णता लिए हुए है।

एक हमारी न्यारी हिन्दी

अगर आप से पूछे कोई,
भारत माँ के भाल की बिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।
नामकरण ले सिन्यु प्रान्त से,
काश्मीर में बचपन बीता।
भवन बनाया मध्य देश में,
जन्में जहाँ राम औ' सीता।।
युवा हुई जब यू.पी., एम.पी.,
औ' बिहार की हुई बाशिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी;
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।
जननी इसकी पालि, संस्कृत,
पुरुखों ने ऐसा ढाला।
आज समूचे भारत में यह,
घूम रही हिन्दी-वाला।।

विद्यापति की पदावली में,
सूरदास-ब्रजक्यारी में।
तुलसी के मानस में छाई:
मुक्तक कंट विहारी में।
गंगा, सरयू, शिप्रा, झेलम,
और पुरातन कालिन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,
एक हमारी न्यारी हिन्दी।।

सुश्री वर्मा के गीतों में,
मीरा के गिरिधर नागर में।
जयशंकर के खण्डकाव्य में,
रत्नाकर के रस-सागर में।।
वहती रहती रात-दिवस यह,
हुई कमी न पावन्दी।
कह दो सारे जग से साथी,

शीश झुकाया कभी न इसने,

हुई कभी न शर्मिन्दी।

कह दो सारे जग से साथी,

एक हमारी न्यारी हिन्दी ॥

शिमला से भोपाल आगरा,

नैनीताल में छाई हिन्दी।

अम्बाला से भागलपुर तक,

पागल-सी पहुवाई हिन्दी॥

मिली अठारह बोली जिसमें,

खड़ी राज भाषा है हिन्दी।

कह दो सारे जग से साथी,

एक हमारी न्यारी हिन्दी॥

एक हमारी न्यारी हिन्दी॥

रोटी हिन्दी, कपड़ा हिन्दी,

और मकान सभी हिन्दी हैं।

तमिल, मराटी, उड़िया, असमी,

औ' कश्मीरी सब हिन्दी हैं॥

बचा न कोई अब सिन्धी।

कह दो सारे जग से साथी,

एक हमारी न्यारी हिन्दी॥

4.3 अप्रकाशित कविताएँ

4.3.1 राघव के नाम पर

मन रूपी

रावण का

फैला है व्याल-जाल ,

अति कराल ,बेमिसाल

संसद से गाँव तक

कानन से छाँव तक,

डसने को बैठा है

स्वर्णमयी लंका के

गरल भरे विवर में

मार रहा जोरों से

रह -रह फुफकार।

राघव के नाम पर।

पता फिर

लगाना है

बनकरके हुनरमंद

हृदय की अगाध मूर्ति

जनक -लली सीता का,

लंका में प्रेषित कर

वीर हनुमान को,

लेकर के लक्ष्मण का

बौद्धिक आधार।

राघव के नाम पर।

जीतेंगे

राम ही

रथी वीर रावण से

होकर के विरथ भी

लेकर अवलंब प्रबल

अपने ही आत्म का,

आत्मा विजयिनी है

मानवेंद्र राघव के

तीव्र प्रखर बाणों से

करेगी दशानन को

नित्य क्षार क्षार।

राघव के नाम पर।

और आज

आप भी

अंतस् में पले-बढ़े

दुर्विनीत रावण को

कीजिए पराजित खुद ,

बाहर के रावण को

फेंक दो उखाड़कर ,

जोड़ राघवेंद्र से

साधना- कसौटी के

प्रगतिशील तार।

राघव के नाम पर

4.3.2 देश का किसान

देश का किसान

देखा है आप ने

कभी उस किसान को

धरा और दिनकर के

भीषण अनुताप से

होकर के श्रांत-क्लांत

सोता है रजनी में

सदा ही उतान।

कर्जों का

बोझ लाद

अपने ही शीश पर

भरता है झोली वह

नित्य सदा औरों की,

गुठलाए कुसिया से

खेत में बनाता है

'सीर' के निशान।

पीत पाग

बाँध कर

चमरौधे जूतों को

पैरों में घाल कर,

युगल बैल नाध कर

कँकरीले पथरीले

बंजर के मंजर को

उर्बरा बनाता है

करके श्रमदान।

साठ की

उमरिया में

धान की कियरिया में

सुरती को फाँक-फाँक

बैलों को झाँक-झाँक

'निनी निनी' गाता है

छेड़ता है ठुमरी की

मंद-मधुर तान।

संकट की

चक्की में

रोज-रोज पिसता है

औरों की भूख को

बीन-बीन हरता है,

आज के कुबेरों ने

कहाँ दर्द समझा है?

नहीं कहीं उसके है

दुःख का निदान।

बढ़ी हुई

बिटिया के

ब्याह की तबाही में

अर्थ की उगाही में

देख-देख अपनी बद-

हाली कंगाली को

आये दिन झूल रहा

फाँसी के फंदे में

देश का किसान।

बैंक की

उधारी में

कर्ज की सवारी में

सुता की बिमारी मे

रहा-सहा नारी मे

हलधर के उलझ गए

ठठरी में प्रान।
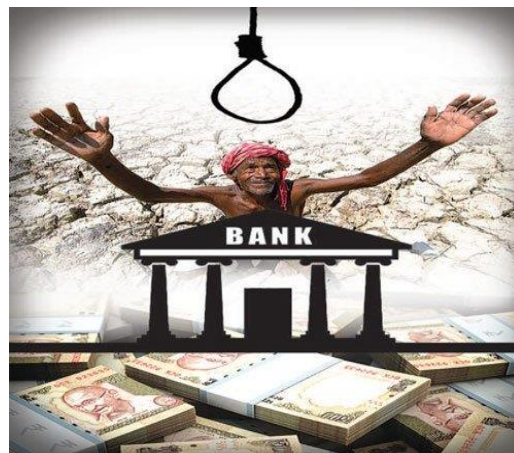
धरती के

पुत्रों का

कैसे कल्याण हो ?

शासन की कोन कहे

मूक है प्रशासन भी

कोई तो तान सके

प्रगति का वितान।

4.3.3 करता विश्वास नहीं

करता विश्वास नहीं

उस महान ईश पर

दे सकता रोटी ना

किंचित दो जून की

गर्दिश से जूझ रहे

अधमरे गरीब को,

मगर उसी निर्धन को

करता है दावा जो

स्वर्ग भेज देने का

बनकर भगवान।

करता विश्वास नहीं

नटखट दरवेश पर

बाँटता दुवाएँ जो

दौलत के लोभ से,

करता है झाड़-फूँक

बिना तंत्र-मंत्र के

हाथों को चूमकर

स्वयं झूम झूमकर

बन करके पीर और

बन करके खान।

करता विश्वास नहीं
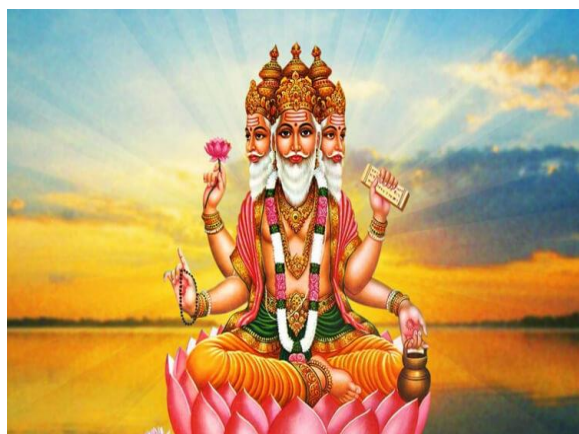
उन बलीन मल्लों पर

याकि पहलवानों पर

करते जो नूरा की

कुश्तियाँ अखाड़े में

ग्रीष्म ठंड जाड़े में

दाँव खतम करते हैं

बिना हार - जीत के,

पाने को पुरस्कार

एक ही समान।

करता विश्वास नहीं

उस छली पुरोहित पर

बाँच रहा पोथी जो

नित्य स्वर्ग-नर्क की

धनिकों से माल ऐंठ

कर रहा पुजापा है,

रंक को रिझाता है
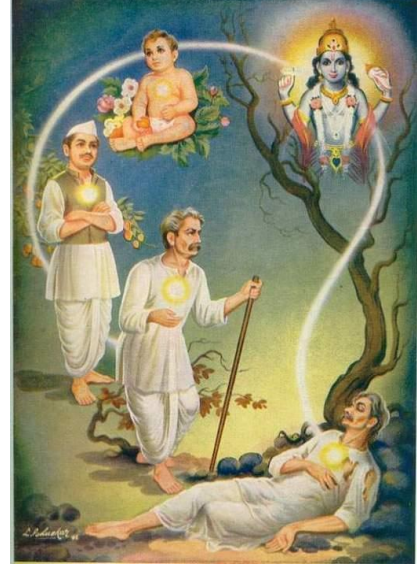
भय का संत्रास दिखा

"यहाँ नहीं दोगे तो

वहाँ पड़े देना ही"

इसी मूलमंत्र पर

मरासन्न बुधिया से

लेकर गोदान।

4.3.4. चंदा का होता अभिनंदन

समय-चक्र में बँधा हुआ है,

अखिल भुवन का चिर आवर्तन;

निशाकाल के सघन तिमिर में,

चंदा का होता अभिनंदन ।

रवि, किरणों का पुंज समेटे ,

पहुँच गया पश्चिम के द्वारे ,

तभी विभा ने वितत् व्योम में,

ग्रह,नक्षत्र, शुभ चाँद उतारे ,

सूरज का रथ भगा जा रहा ,

सुनकर चंदा का आवाहन ।

निशाकाल के सघन तिमिर में,

चंदा का होता अभिवादन।

नैऋत दिशि की अमराई में,

डूब गया दिनकर का गोला ;

पूर्णचंद्र की मदिर किरण ने ,

नीलांबर -घूँघट-पट खोला;

अलंकरण के जुटा लिए हैं ,

रजनी ने मोहक संसाधन।

निशाकाल के सघन तिमिर में,

चंदा का होता अभिवादन।

देख चँदोवा सित तारों का ,

निशि-गंधा ने गंध बिखेरा,

माध्वी पीकर मत्त पवन ने,

पंख खोल चंपा को टेरा ;

सुनकर टेर अधीर हो गए ,

टूटा ऋषियों का निदिध्यासन।

निशाकाल के सघन तिमिर में ,

चंदा का होता अभिवादन।

मधु राका की चंद्रकलाएँ,

पीत ज्योत्स्ना बरसाती हैं;

खुल-खुल जाते श्यामल कुंतल ,

निशा नशीली मदमाती है ;

देख तरुणिमा देव-दनुज-नृप,

छोड़ चले अपना वीरासन।

निशाकाल के सघन तिमिर में ,

चंदा का होता अभिवादन।

निशा श्रमिक का श्रांति-निलय है,

और योगियों का जगराता,

विरही की यह कनक-कसौटी,

है उलूक की दृष्टि-विधाता;

योगी-यती-शाक्त-संन्यासी,

करते यामा का आराधन।

निशाकाल के सघन तिमिर में,

चंदा का होता अभिवादन।

4.3.5 वह औरत

शब्द से घिरी हुई

उस आम औरत को देखो

बयां करती हैं

उसकी पनियल आँखें

बहुत कुछ ,

मगर मौसम की

नासाज भरी हरकत से

रहती है सदा चुप।

सूरज की सुनहली तीर

नहीं पहुँचती

उसके गर्दिश भरे आँगन में

वहाँ तो बना रहता है

आठो याम

ओर से छोर तक

निरन्तर अँधाघुप।

मुँह-जड़े ताले के

घनघोर नियंत्रण में

उसकी पैठारी है,

बैखरी के रहते हुए भी

बेजुबां में रहना

उसकी लाचारी है।

उसकी गाँठ में

नहीं है एक भी साँठ

नहीं है झोली में

एक भी धेला

नहीं मिला आज तक

उसे किसी भी योजना का लाभ

नदारद है

सरकारी सूची से

उसका नाम।

नहीं आया

कोई भी रहनुमा

लगाने के लिए

'सही' का निशान

उसकी आप बीती पर

इसीलिए उसने

ततूरी जैसे मुख पर

स्वयं चढ़ा रखी है

चुप रहने की लगाम।

4.3.6 एक कवि बाँदा के (जवाहरलाल 'जलज' के प्रति)
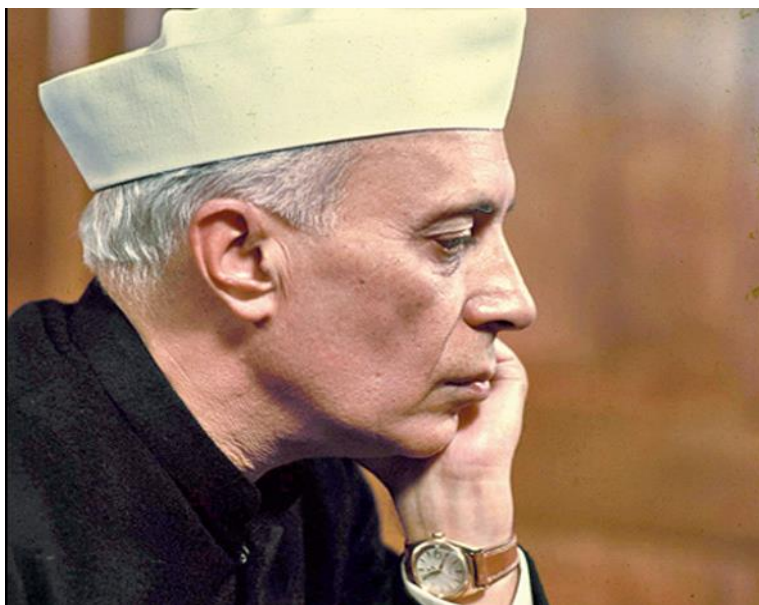
कवियों की संख्या है

धरती पर बेशुमार,

इन्हीं बेशुमारों में,

एक सुकवि बाँदा के

नव्य सृजनहार।

अपने ही नाज के

बेहतर अंदाज के

'लाल' रघुराज के

लिखते उपनाम 'जलज'

अनुचर केदार के,

आज के जमाने के

बड़े कलमकार।

जितना वे

बाहर से

लगते हैं सौम्य- सरल,

उतना ही भीतर से

निश्छल निर्द्वन्द्व हैं,

रहते सानन्द हैं,

मैने भी देखा है

गले से उतारा है

उनकी कविताओं को

उनके ही शोभनीय

भव्यतर निकुंज में,

बड़े ही करीब से

बनकर पटिदार।

पंडित नहीं हैं वे

किसी काव्य शास्त्र के

और नहीं पिंगल के

उद्भट आचार्य,

कविता के पीछे वे

कभी नहीं भागते

करती है कविता खुद

उनका मनुहार।

रहते गंभीर सदा

स्वयं नहीं बोलते

बोलती है कविता खुद
जादू की भाँति त्वरित
उनके ही शीश पर
होकर सवार।
भाव और शिल्प का
अनुपम गठजोड़ देख

आज खुद हिलाते हैं
अपनी दुमदार पूँछ
उनके ही ईर्द-गिर्द
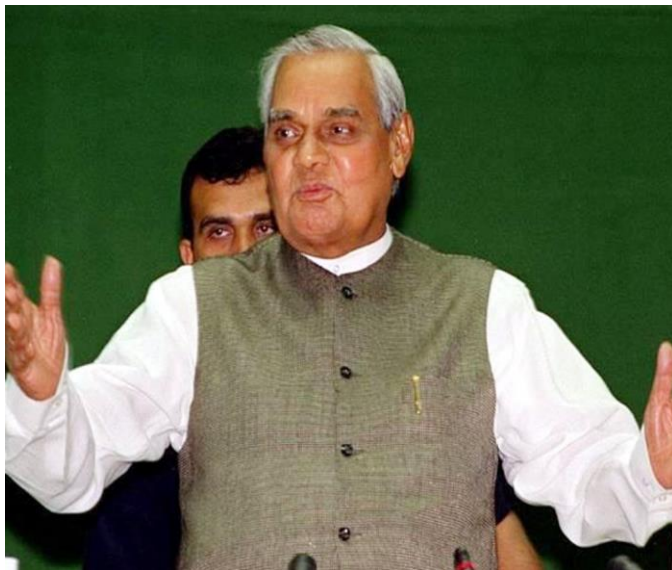
कविता के बड़े-बड़े
पंडित आचार्य;
कविता की नब्ज को
स्वयं वे टटोलते
कविता की गोल-पोल
कभी नहीं खोलते,
खोलती है कविता ही,
भाव के समुंदर में
बन करके ज्वार।
लिखते हैं मुक्तछंद
कभी कभी छंदयुक्त
किंतु कभी सपने में
'छंद मुक्त' कविता पर
हाथ नहीं डालते;

तीनों के अन्तर की

गहरी पहचान है,

छंद के विधान पर

उनको अभिमान है,

कविताएँ बेशक हैं

उनकी अतुकांत मगर-

कभी नहीं टूटता

लय का आधार।

रखते हैं शब्दों को

समुचित स्थान पर

छंद के तराजू पर

भली भांति तोलकर;

अब के खद्योत कवि

लिखते हैं 'गद्यगीत'

बिना किसी तान के

मुक्तछंद कविता को

करते बदनाम हैं,

कविता भी रोती है

सघन गद्य देखकर

होती है रोज-रोज

महा शर्मसार।

कविता की

कक्षा में

या किसी जमात में

झुकते न नयन कभी

नामचीन 'जलज' के,

अर्धशतक कवियों के

कविता- संचालन का

एक निशाकाल में

कायम रिकॉर्ड है;

हमें बड़ा गर्व है

बेमिसाल 'जलज' पर

ठहरे जो अपने ही

भारतीय मुल्क के।

चाहता है कोई यदि

नेक और श्रेष्ठ विधा

कविता-संचालन की

जीवन में सीखना ,

चाहता है बनना यदि

हिंद का दिवाकर नित

सीखे कविताई वह

सधे हुए 'जलज' के

लय भरे विभाव से

वाचिक अनुभाव से

राष्ट्रीय मंचों पर

आज और अभी-अभी

बिना किसी शुल्क के।

4.3.7 गुलफाम आ गया है

एक बूंद

ओस की

लेकर तारुण्य अरुण

दमक रही मोती-सी

एक युवी लतिका के

बेहतरीन पात पर ,

चतुर्दिक चमकता था

राग भरे गागर- से

शांत-कांत-अमल-धवल

उसका लावण्य;

गुलफाम आ गया है।

एक हवा आएगी

ठंड ठंड शबनम को

लेकर आगोश मे़

धरा में सुलाएगी,

करके अस्तित्वहीन

आगे बढ़ जाएगी,

हुआ भी यथार्थ वही

घूँट लिया धरती ने

हीरक-सी ओस को,

सबल की जमातों में

नहीं कभी होते हैं

निबल अग्रगण्य;

गुलफाम आ गया है।

निकलेगा

दिनकर भी

अभी- अभी प्राची से

संग लिए सारथी,

किरण में बिठाकरके

अंबर ले जाएगा,

गरम-गरम अपनी ही

छाती सहलाएगा,

लाल -लाल अधरों से

उसको पी जाएगा,

शबनम हो जाएगी

लुप्त व नगण्य;

गुलफाम आ गया है।

स्वार्थ-भरी

दुनिया में

लतिका बेचारी की

गोद हुई सूनी

बिना तुहिन बिंदु के,

उसने दुलराया है

फूल-सी दुलारी को

लगातार रात भर

अपने ही अंक में

वात्सल्य भाव से,

किया नहीं जीवन में

ओस के सुपोषण में

कोई कार्पण्य;

गुलफाम आ गया है।

चलता है

पहिया बस

उसी महाकाल का

जिसके मुताबिक ही

चमकेगी ओस बिंदु

पुनः उसी पात पर

अगले दिन वैसे ही,

चलता ही रहता है

चक्र रह निरंतर ही,

'आना' है 'जाना' है

और 'तने' रहना है,

जगती के नियमों से

सदा बँधें रहना है,

खोकर के अहंभाव

करिए तार्पण्य;

गुलफाम आ गया है।

4.3.8 चुनाव आ गया है

निकल पड़े

नेता जी

लेकर अपार भीड़

घूम रहे गली-गली

करते हैं बेशुमार

लंबे सौगातों की

मौखिकीय घोषणा

कथनी बुलंद है,

'करनी' के मुखड़े में

डाल दिए ताले;

चुनाव आ गया है।

बाँचते हैं

रोज-रोज

नित्य नये -नये छंद

बिना छंद शास्त्र के,

देखा है हमने भी

छंद कुछ एजेण्डे के

लगते हैं द्वैधमुखी

भीतर से काले।

चुनाव आ गया है।

करते

परिवर्तन का

शंखनाद महोच्चार,

गढ़ते हथकंडे हैं

टटके-से-टटके नित

छीन कौर, और का

संसद के पण्डे ये

बड़े ही निराले,

चुनाव आ गया है।

लगता है

हमको भी

'कथनी' पथराई है

जमी हुई काई है

बीच-बीच कहीं-कहीं

दिख रही गोराई है

क्या करें सवाल हम?

इन सफेदपोशों से

देश भी तो अपना है

इन्हीं के हवाले;

चुनाव आ गया है।

करते

प्रयोग रोज

अपने संभाषण में

नित्य खड़ीबोली व

हिंद की जबान का,

किंतु नहीं ख्याल उन्हें

हिन्दी -उत्थान का ,

भाषा के नाम पर

देश अभी खाले ;

चुनाव आ गया है।

बेल यदि

बढ़ाना है

सचमुच उत्कर्ष की

संसद से गाँव तक

आतप से छाँव तक़

करनी व कथनी में

मेल करो नेता जी ,

काम अभी बाकी है

"जनमत के पाँवों में

चिलक रहे छाले, "

चुनाव आ गया

4.3.9 ब्याह हो गया है

पीते थे दूध कभी

छन्नी से छानकर

खाते थे माल-पुआ

सोते थे तानकर ;

किंतु आज कल्लू को

दूध-दही दूर रहा

किसी भी मुहल्ले में
मिलता ना मट्ठा है ;
तीजा त्योहारों में
हाट-हाट भटक रहा
उसे न नसीब कहीं
लइया -गुड़ -गट्टा है ,
जूझ रहा कल्लू अब
गेह के तनाव में
नित्य खाक छान रहा
टका के अभाव में।

पेट-पीठ एक हुए
कमर हुई कमटा-सी
नयन हुए फ्यूज बल्व
नाक हुई चिमटा-सी,
गर्दन है चिलमदार
हुआ चिबुक हुक्का-सा

चेहरा भी सूखकर
हो गया मुनक्का-सा,
मूँछ हुए चुरुर-मुरुर
करते हैं हुरुर-हुरुर
केश बेलगाम हुए
उड़ते हैं फुरुर-फुरुर।

कल्लू की कुटिया में

इत्र ना फुलेल है

मेहनत से चू रहा

पसीना ही तेल है,

चिपट गए गाल और

काया कंकाल है

एक -एक रोटी को

हो गया मुहाल है,

एक दिवस कल्लू से

भेंट हुई औचक ही

हमने यूँ पूछ लिया

उसको बदहाल देख

"कल्लू जी कैसे यह

हाल हो गया है।"
कल्लू जी बोल पड़े
दाँत को निपोरकर
" चाचा जी , मेरा अब

ब्याह हो गया है।

पञ्चम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा अपने लघु शोध प्रबंध **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का शैक्षिक योगदान** में सम्यक प्रकार अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष निकलकर सामने आए—

- अगर सफलता की सर्वश्रेष्ठ ऊंचाइयों पर पहुंचना है, तो व्यक्ति को अपना लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण मेहनत, लगन से कार्य करते करना चाहिए विपत्तियों एवं कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए लगन शील व्यक्तियों को एक ना एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।
- 'सनेही' जी केंद्रीय विद्यालय में अध्यापक के समय अनेक प्रसिद्ध मंदिरों एवं पर्यटक स्थलों का भ्रमण किया, जिसके अनेक अविस्मरणीय संस्मरण हैं।
- गया प्रसाद जी को कविताओं की रचना करने एवं उनमें सही उनमें सही की मोहर लगाने का श्रेय उनके गुरु 'विनीत' पांडे जी का था इनका सनेही उपनाम गुरु विनीत पाण्डेय जी का दिया हुआ है।
- सनेही जी को अध्ययन यात्रा के समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा फिर भी लगन और मेहनत के साथ इन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की।
- अपने अध्ययन के प्रति निरंतर सजग रहकर अपनी सेवायोजन यात्रा (लेखपाल जीवन, शिक्षा विभाग) के दौरान उच्च पदों पर आसीन हुए।
- 'सनेही' जी अपनी सेवायोजन यात्रा लेखपाल जीवन से प्रारंभ करते हुए, केंद्रीय विद्यालय टीजीटी हिंदी, पीजीटी हिंदी, असिस्टेंट प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के पद को सुशोभित किया। वर्तमान में सेवानिवृत्ति के पश्चात एक निजी महाविद्यालय में प्राचार्य पद पर कार्य करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सेवाएं दे रहे हैं।

- महापुरुषों का जीवन जन सामान्य के लिए अनुकरणीय बन जाता है। महापुरुषों का जीवन व उनका व्यक्तित्व तथा उनके सभी कृत्य असामान्य होते हैं। जो जन्मजात कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों का सामना करके ऊंचे उठते हैं, और श्रद्धास्पद बन जाते हैं। ऐसे ही महापुरुष समुचित मार्गदर्शन कर सकते हैं। उन्हीं महापुरुषों में से एक है। डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' जी जिन्होंने अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शिक्षित और सांस्कृतिक समाज के सर्जन हेतु समर्पित कर दिया है।
- डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' ने अपने जीवन में यह अनुभूत किया कि कि हम पाश्चात्य के अधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को भुलाते जा रहे हैं। जो कालांतर में हमें गरिमा रहित कर देगी। वह ऐसे भारत की संकल्पना करते हैं। कि जहाँ शिक्षा एवं संस्कृति द्वारा ऐसे समाज का निर्माण किया जाए, जो भारत की अन्य संस्कृति एवं आध्यात्मिक शक्ति को ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम खोजों से संतुष्ट कर भारत को पुनः विश्व गुरु का दर्जा दिला सके। डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' जी इसी संकल्प को पूरा करने में प्रयासरत है।
- डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' का मानना है। कि गुरुकुल में शिक्षकों, आचार्यों का कर्तव्य है कि बच्चे को ऐसी प्रेरणा, सुसंस्कार, सद्प्रशिक्षण एवं सीख दें। ताकि वह समाज एवं स्वयं के लिए तथा राष्ट्र एवं विश्व के लिए सुन्दर गुलशन का निर्माण कर सके।
- शिक्षकों को चाहिए कि वे बिना भेदभाव के अपने शिष्यों को उन्नति, प्रगति, उसके अन्तः में छिपे दोष दुर्गणों का विरेचन कर और गणों का समावेश करें।
- विद्यार्थी को अपने कर्म के बल पर जीवन का निर्माण करना चाहिए। विद्यार्थी को विनम्र, अनुशासित, नियमबद्ध और सक्रिय रहना चाहिए।
- शिक्षा में व्यक्ति को महत्वपूर्ण इकाई माना है, क्योंकि अगर व्यक्ति शिक्षित चरित्र और गुण वाला होगा तो समाज भी शिक्षित होगा।
- समन्वय शिक्षा अर्थात प्राचीन भारतीय संस्कृति और आधुनिकता के साथ विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है।

- व्यक्ति को शरीर, मन, आत्मा के साथ-साथ हाथों के परीक्षण में भी योगदान देकर व्यावसायिक शिक्षा देने की बात कहीं है।
- समाज के अनाथ, बेसहारा बच्चों को जिनका कोई नहीं है, उनको निःशुल्क शिक्षा देखकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जा रहा है।
- विद्यालयों में सर्वांगीण विकास परक शिक्षा का संचालन किया है, तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसार शिक्षा दी है।
- विद्यार्थियों को चरित्रवान होना अति आवश्यक है, तथा इस बात पर बल दिया कि पुस्तकीय शिक्षा उपयोगी है, लेकिन विद्यार्थियों की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें चरित्र का निर्माण हो, मानसिक शक्ति में वृद्धि हो बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो।
- बच्चे शिक्षा ग्रहण करके उच्च पदों पर सरकारी सेवा कर रहे हैं तथा गुरुकुलों से शिक्षा ग्रहण करके उपदेशक बनकर भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

शोधकर्ता द्वारा अपने लघु शोध प्रबंध **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' के शैक्षिक योगदान** का सम्यक प्रकार अध्ययन कर शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित निकलकर सामने आए—

- एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के गुणों को परख कर उन्हें निखार हेतु निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए, शिक्षक का जीवन तभी सफल होता है जब शिक्षार्थी उन से भी आगे निकल जाए।
- प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में जब भी अवसर मिले भ्रमण एवं यात्रा पर जाना चाहिए| इससे हमें देश की सभ्यता एवं संस्कृति को निकट से जानने का अवसर मिलता है| हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों का देश है अनेकता में एकता एवं वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन हमें संस्कृत यात्राओं के दौरान मिलते हैं| विद्यालयों द्वारा प्रत्येक स्तर का विद्यार्थियों को दूर-दराज(भिन्न सांस्कृतिक परिषद से परिचित कराने हेतु) भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए।

- हमें भी अपने व्यक्तित्व को इस प्रकार का बनाना चाहिए कि हमारे गुणों का प्रकाश चारों ओर फैले और हमें स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आधिकारिक कार्यक्रमों की सहभागिता करने का अवसर मिले जिससे समाज लाभान्वित हो एवं भावी पीढ़ी को प्रेरणा प्राप्त हो।
- 'सनेही' जी ने अनेक कविताओं की रचना की जिसमें से कुछ प्रकाशित व अप्रकाशित हैं, तथा उनकी लेखन की काव्य धारा अभी भी अनवरत जारी है व्यक्ति को जीवन में कुछ ना कुछ करते रहना चाहिए, लगन शील व्यक्ति मुकाम पर पहुंचता ही है, हमें भी सनेही जी के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर किसी क्षेत्र विशेष में निरंतर अपना योगदान करते रहना चाहिए योगदान करते हुए अपने ज्ञान को प्रकट करते रहना चाहिए।
- विद्यालयों में शिक्षकों को विषय के ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों, पत्रिकाओं, वेद, पुराणों, इन्टरनेट आदि से नवीन करते रहना चाहिए।
- शिक्षकों को समय-समय पर अंशकालीन वा दीर्घकालीन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रोजेक्ट वर्क में भाग लेना चाहिए।

5.3 अध्ययन के सुझाव

प्रस्तुत लघु शोध में, **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' के शैक्षिक योगदान** का विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात पाया, कि किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए, कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो| प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहें हैं —

- विद्यालयों में शिक्षकों को विषय के ज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का भी ज्ञान होना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आधुनिक शिक्षण पद्धति के ज्ञान को पुस्तकों, पत्रिकाओं, वेद, पुराणों, इन्टरनेट आदि से नवीन करते रहना चाहिए।

- शिक्षकों को समय-समय पर अंशकालीन या दीर्घकालीन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रोजेक्ट वर्क में भाग लेना चाहिए।
- सप्ताह में कम से कम दो बार भारतीय संस्कृति, एवं अध्यात्म से जुड़े विषयों पर विचार विमर्श करना चाहिए।
- विद्यालयों में बच्चों को भारतीय संस्कृति और नैतिकता से जुड़े प्रोजेक्ट कार्य देने चाहिए जिससे बच्चे अपनी संस्कृति के बारे में समझ सकेंगे।
- विद्यालयों को वर्तमान शैक्षिक वातावरण में पाश्चात्य के अंधानुकरण को देखते हुए, भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के महत्व को समझना चाहिए तथा आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ इसके प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए।

अंत में हम कह सकते हैं कि समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए एवं शिक्षा को संस्कृति से जुड़ा होना चाहिए। धार्मिक एवं सांस्कृतिक शिक्षा ही ज्ञान का आदि स्रोत है और ज्ञान ही शक्ति और समृद्धि का मूल आधार है। जिस देश में सांस्कृतिक शिक्षा का अभाव है उस देश का शासन पंगु होता है और उसका अस्तित्व हमेशा खतरे में रहता है।

5.4 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी शैक्षिक शोध में उपादेयता अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत लघु शोध का **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही' के शैक्षिक योगदान** है, जिसके अंतर्गत लेखक **'सनेही'** जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया जिससे शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य को इनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपनी रूचि के अनुसार जीवन में ऐसे पर्याप्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए, जिससे यह जगत हमें भी सदा याद रखें।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में लेखक **डॉ० गया प्रसाद 'सनेही'** की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है| जिन्हें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है, जो हम सभी के साथ अनुस्यूत हैं| इनकी पुस्तकों का अध्ययन कर शिक्षक, विद्यार्थी एवं जन सामान्य भारतीय संस्कृति के महत्व को समझ सकेंगे तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे।

5.5 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गए लघु शोध-प्रबंध **डॉक्टर गया प्रसाद सनेही जी का शैक्षिक योगदान** में कवि गया प्रसाद जी की प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं का अध्ययन किया गया है| अध्ययन के दौरान कुछ नवीन अनुभवों तथा विचारों की अनुभूति की गई, जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोध हेतु सुझाव के रूप में भविष्य के शोधार्थियों की सहायता हेतु प्रस्तुत करता है यह अगामी शोध हेतु सुझाव निम्नलिखित **हैं**—

- भावी शोध में सनेही जी की कविताओं में निहित मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है|
- भावी शोध में बुंदेलखंड के अन्य कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है
- भावी शोध में कवि सनेही जी के साथ अन्य कवियों के काम का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|
- प्रस्तुत अध्ययन हिंदी भाषा के प्रसिद्ध कवि सनेही जी की शिक्षा का क्षेत्र में योगदान पर आधारित है, भावी शोध में हिंदी के अतिरिक्त अन्य भाषा के कवियों को सम्मिलित किया जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। *वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/10744>

सिंह, नीलम(1999)। *भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12268>*

मिश्रा, शशि (2002)। समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/11762>

वर्मा, रामनिवास **(2005)** । *भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०)* <http://hdl.handle.net/10603/361860>

शर्मा, शशिकांत (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य*

में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12530>

सिंह, किरन (2008) रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/178440>

सिंह, अनन्त बहादुर (2008)। *मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/239635>

सिंह, रेनू (2008)। भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)। <http://hdl.handle.net/10603/12262>

तिवारी, सुधा (2009)। *लोकतान्त्रिक भारत कि शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/14905>

शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/235529>

डॉ गया प्रसाद 'सनेही' जी का शैक्षिक एवं साहित्यिक योगदान

मंजिल दूर है पर रुकना नहीं है, हर कदम मंजिल के करीब ले जाता है।
किताबों में वो शक्ति है, जो आपकी किस्मत बदल सकती है।